॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन

सम्पादक-मूलचंद किसनदास कापड़िया चंदावाड़ी-सूरत ।

वीर सं. २४५० चैत्र वि. सं. १९८०

वर्ष १७ वां ईस्वीसन् १९२४.

SHREE JAIN LIBRARY No.— Date........19 ...TERN RAJAPUTTA...

विषयानुक्रमणिका ।

नं०	विषय	पृष्ठ
१-२	सम्पादकीय विचार, जैन समाचार संग्रह	१-४
३	वर्तमानमें आयुर्वेदकी आवश्यकता व उपयोगिता (आयुर्वेदभूषण पं० सत्यंधर काव्यतीर्थ)	९
४-५	पद (पं० मुन्नालाल विशारद), दरिद्रतासे दुःख....	११-१२
६	सत्संग (के० एन० मोठावाला ईडर)....	१३
७	रूपाबाई स्मारक मंडळनुं तृतीय अधिवेशन	१४
८-९	अहिंसा (पं० मुन्नालाल निशंक), नीति रत्नमाला	१५-१६
१०	व्याख्यान साहु जुगमंदरदासजी सभापति भारत० दि० जैन परिषद मुजफ्फरनगर	१७
११	प्रस्ताव मुजफ्फरनगरमें भारत० दि० जैन परिषद	२७
१२	विश्वासघातका फल	३१
१२	सूरतमां जैन साहित्य परिषद्....	मुख पृष्ठ

पेशगी वार्षिक मूल्य रु० २-०-० पोष्टेज सहित।

સુરતમાં જૈન સાહિત્ય પરિષદ.

સુરતમાં જૈન સાહિત્ય પરિષદની બીજી બેઠક વૈશાખ વદ ૧-૨-૩-૪ એ ચાર દિવસોમાં ગુજરાતના પ્રસિદ્ધ કવિ નાનાલાલ દલપતરામના પ્રમુખ પણા નીચે ગોપીપરામાં ભારે ઉત્સાહથી મળી હતી જેમાં શ્વેતાંબર જૈનોનો વિશેષ ભાગ હતો છતાં પણ દિગંબર જૈનો તથા કેટલાક સ્થાનકવાસીએ પણ એમાં ભાગ લીધો હતો. પરિષદમાંથી બહાર ગામથી ૨૫-૩૦ સારા સારા સાહિત્ય પ્રેમી ભાઇઓ આવ્યા હતા. તથા સુરતના અજૈન નેતાઓ જેવાકે રા૦ બા૦ કમળાશંકર, પાઠકજી, ગણાત્રા, ભિક્ષુ અખંડાનંદ, મથુરારામ હોરા, ગુલાબદાસ વકીલ, કૌશિક આદિ હાજરી આપતા હતા. તથા સ્વામી આત્મસ્વરૂપ, કમળાશંકરભાઇ, કૌશિક વગેરેએ ભાષણો આપ્યાં હતાં. આ કાર્ય શેઠ જીવણચંદ સાકેરચંદ, મુનિ માણેકમુનિ વગેરેના સતત્ પ્રયાસનુંજ ફળ હતું. ટિકિટ રાખવા છતાં રોજ ૪૦૦-૫૦૦ ભાઇઓ અને બ્હેનો હાજર રહેતા હતા. ચોથી બેઠકમાં તો સવારે ૯ થી ૧ ચાર કલાક સુધી કાર્ય ચાલ્યું હતું.

સ્વાગત કમેટીના પ્રમુખ નગરશેઠ બાબુભાઇ ગુલાબભાઇએ પોતાના વ્યાખ્યાનમાં જણાવેલું કે સુરત પ્રાચીન શેહેર છે, એમાં ઘણી જૈન પાઠશાળા, કન્યાશાળા, બોર્ડીંગ, જૈન વનિતાવિશ્રામ, ભોજનાલય, પાંજરાપોળ, જીવદયાખાતું, ઘણા જ્ઞાન ભંડારો તથા સારા સારા જૈન મંદિરો તેમજ એક લાખ રૂ૦નું સેઠ દેવચંદ લાલભાઇ પુસ્તકોદ્ધાર ફંડ છે તેમજ બે લાખ રૂ૦ની સખાવતથી નગીનદાસ ઘેલાભાઇ ઝવેરી જૈન હાઇસ્કૂલ ખુલવાની છે એટલે અત્રે લાખો રૂ૦ દાનમાં ખરચાય છે.

સભાપતિ કવિશ્રી નાનાલાલે પોતાના ભાષણમાં જણાવ્યું હતું કે જૈનોનું સાહિત્ય અતીવ પ્રાચીન છે તથા મહત્વપૂર્ણ છે તેમજ એની રક્ષા અને પ્રકાશની આવશ્યકતા છે. ઘણા અજૈન સાક્ષરો દ્વારા જૈન સાહિત્યને અન્યાય થઇ રહયો છે પણ તેમાં દોષ જૈન વિદ્વાનોનોજ છે કે તેઓ પોતાનું સાહિત્ય બરાબર પ્રકાશમાં લાવતા નથી. જૈનોમાં હજારો ગ્રંથ તાળા કુંચીમાં બંધ પડેલા છે. ઉપદેશ અને ક્રિયાએ જૈનધર્મ સર્વે ધર્મોમાં વિશેષતાથી અહિંસક છે. જૈન સાહિત્ય ઘણી ભાષાઓમાં ઉપલબ્ધ છે. ચાર સંઘોની સ્થાપના જૈનોમાંજ છે. શિલગુણસુરી, હેમચંદ્રાચાર્ય, હીરવિજયસૂરિ, આનંદઘન વગેરે આચાર્ય તથા ભામાશા, ધનાશા, જગતસેઠ, દગડુસા વગેરે પ્રસિદ્ધ પુરૂષ જૈનોમાં થઇ ગયા છે તથા આબૂ, તારંગા, મુક્તાગિરિ વગેરે પ્રાચીન કારીગરીના તીર્થો જૈનોના છે. જૈનોએ કલાની રસિકતા છોડી સાહિત્યરસિક થવું જોઇએ. જૈન કોલેજ અને જૈન યુનિવર્સિટીની જરૂર છે. વિદેશોમાં હજારો જૈન ગ્રન્થ પહોંચી ગયા છે અને ત્યાં તેની કેટલી ઉતમ રીતે રક્ષા અને ઉપયોગ થઇ રહયો છે, એ પર વિચાર કરી જૈનોએ પોતાનું સાહિત્ય સંસારભરમાં પ્રકાશમાં લાવવું જોઇએ વગેરે વગેરે.

પરિષદને આશરે ૫૦-૬૦ તાર અને પત્રો સહાનુભૂતિના આવ્યા હતા જે અમે વાંચી સંભળાવ્યા હતા. સબજેક્ટ કમેટી અને નિબંધ કમેટીમાં પણ અમોએ ભાગ લીધો હતો. બીજી ત્રીજી બેઠકોમાં કુલ્લે છ ઠરાવો નીચે મુજબના થયા હતા.

ઠરાવ ૧ લો. જે જે સંસ્થાઓ અને રાજા મહારાજા તથા વ્યક્તિઓ જૈન સાહિત્ય ક્ષેત્રમાંથી પ્રાચીન અને અર્વાચીન ગ્રન્થો બાહેર પાડીને સાહિત્યને પુષ્ટી આપવાને સતત્ પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે તે સર્વેનો આ પરિષદ્ આભાર માને છે. — પ્રમુખ તરફથી

ઠરાવ ૨ જો. બીજી પરિષદ્ મળે ત્યાં સુધી પરિષદનું કામકાજ ચાલુ રાખવા માટે નીચે જણાવેલા મહરથોની વધારવાની સત્તા સાથે એક કમેટી નીમવામાં આવે છે અને તેમણે પરિષદમાં મંજુર થયેલા ઠરાવોનો બનતો અમલ કરાવવાને અને પરિષદના પ્રસિદ્ધ થયેલા હેતુઓ સફળ કરવાને બનતો પ્રયાસ કરવો અને પરિષદમાં થયેલ કામકાજનો રીપોર્ટ પ્રગટ કરવો. કમીટીને આ કાર્ય કરવા માટે એક સારા ફંડની આવશ્યકતા છે.

(ટાઇટલના ત્રીજા પેજપર જુઓ)

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १७ वाँ.	वीर संवत् २४५०. चैत्र वि० सं० १९८०.	अंक ६ ट्ठा

संपादकीय वक्तव्य

श्री जिनवाणी माताकी पूजा भक्ति विनय करनेका महान परम श्रुतपंचमी पर्व। पवित्र पर्व श्री श्रुतपंचमी पर्व आगामी ज्येष्ठ सुदी ५ (ता० ७ जुन) को निकट ही आ पहुंचा है। यह वही पवित्र दिन है कि जिस दिन श्री भूतबलि व अर्हद्बलि आचार्योंने सिद्धान्त शास्त्रोंकी प्रथम पूजा की थी तबसे ही इसका नाम श्रुतपंचमी पड़ा व इस पर्वकी पूजनको श्रुतस्कंध विधान कहा जाता है। करीब दस पंद्रह वर्षसे इस पर्वको मनानेकी चर्चा जैनहितैषी आदि पत्रोंमें होनेपर यह पर्व मनाया जाने लगा है, परन्तु खेद है कि इस पर्वका इतना प्रचार अभीतक नहीं हुआ जैसा कि दीवाली पर्वका होता है। हमको हमारी मूर्तियोंसे कई गुणी बढ़कर रक्षा हमारी जिनवाणी माता (जैन शास्त्रों) की करनेकी है जिस तरफ हमने बहुत प्रमाद रखा है। अभीतक ईडर, नागौर आदि स्थानोंपर हजारों ग्रन्थ कैदमें पड़े हुए हैं। सुना जाता है कि ईडरका ग्रन्थ भण्डार पं० कन्हैयालाल द्वारा सुधारा जारहा है परन्तु नागौरका तो जैसाका तैसा है। नागौरके भट्टारक भी काळकर गये तो अब तो उनके शिष्यका कर्तव्य है कि वे अपना वचन पालन करके शास्त्र भण्डार खोलकर उसकी सम्हाल करें। वहांके भंडारपर कई ताले लगे हैं व उनपर मट्टी चूना वर्षोंसे पोत दिया गया है। अब तो किसी भी अवस्थामें यह ग्रन्थ भण्डार खुलवानेकी कोशिश बम्बई सरस्वती भवन द्वारा आगामी जल्सेपर होनी चाहिये।

अब हम यह बतावेंगे कि श्रुतपञ्चमीके दिन हमारे क्या २ कर्तव्य हैं। इस पवित्र दिनमें सब स्थानोंके मंदिरोंमें सुबह श्रुतस्कंध विधान (जिनवाणीकी पूजा) बड़े भक्ति भावसे वाजित्रों सहित होना चाहिये, उस समय मंदिरमें जितने भी शास्त्र हों उनको धूप दिखाकर अच्छे शुद्ध वेष्टनोंमें बांधकर चौकीपर विराजमान करने चाहिये। फिर ग्रंथ सूची न हो तो जितने भी ग्रन्थ अपने२ भण्डारोंमें हों उनकी सूची बनाकर उसकी एक नकल सबको देखनेके लिये बाहर रखनी चाहिये व जिनको जो ग्रंथ पढ़नेको चाहिये

उनके नाम वह ग्रंथ लिखकर देने चाहिये। इस दिनको जाहिर त्यौहार रूपसे पवित्र मानना चाहिये तथा शामको बड़ी भारी सभा करके सबको इस पर्वका महात्म्य सुनाना चाहिये व जैन साहित्यकी रक्षा व उसके प्रचारके प्रबन्ध की चर्चा होकर कुछ न कुछ जैन साहित्यकी सेवाकी योजना करनी चाहिये तथा जो २ ग्रंथ अपने मंदिरोंमें न हों वे अपने मूल्यसे नहीं तो मंदिरोंके भण्डारोंके द्रव्यसे भी इसी दिन मंगानेका प्रबन्ध करना चाहिये। मुद्रित सभी दि० जैन ग्रन्थोंका सुचीपत्र हमारे पास है जो कार्ड लिखनेपर मुफ्त भेज देंगे।

आगामी श्रुतपंचमी पर्व गत वर्षोंकी अपेक्षा विशेष रूपसे हरएक स्थानपर मनाया जाय यही हमारी भावना व अभिलाषा है। तथा इसके समाचार भी हमें मिलनेपर अवश्य प्रकट किये जांयगे।

* * *

मुजफ्फरनगरमें वेदीप्रतिष्ठा, महिला परिषद व

मुजफ्फरनगरमें परिषद्।

भारतवर्षीय दि० जैन परिषद्का प्रथम अधिवेशन चैत्र मासमें अतीव सफलता पूर्वक हो गया। सभापतिका स्थान श्रीमान् साहु जुगमंदिरदासजी नजीबाबादने ग्रहण किया था। आपका व्याख्यान अन्यत्र मुद्रित है जो अक्षरशः पढ़ने योग्य है। आपने समाजके समक्ष निर्भीकतासे जैन समाजकी सच्ची हालत रख दी है। हम समझते हैं आपके इस व्याख्यानसे दि० जैन समाजमें नवचेतन अवश्य आवेगा व उत्साही युवकगण समाज सुधारके लिये अवश्य आगे आवेंगे। स्वागत सभापति बा० बलवीरचन्द्र जैन वकीलका व्याख्यान भी धर्म व जातिप्रेमसे भरा हुआ था। आप भी बड़े उत्साही व धर्मप्रेमी हैं। यह आपके ही साहसका फल था कि परिषदका अधिवेशन मुजफ्फरनगरमें होसका था। अधिवेशनों तो सभाओंके अनेक होगए हैं परन्तु इस बार भारत० दि० जैन परिषदमें जिस उत्तमताके साथ कार्रवाई हुई थी वह दूसरे अधिवेशनोंमें शायद ही कहीं हुई हो। अर्थात् परिषदमें मात्र अंग्रेजी पढ़े लिखे नहीं परन्तु कई पंडितगण, ब्र० भागीरथजी, ब्र० गणेशप्रसादजी, ब्र० सीतलप्रसादजी जैसे त्यागीगण तथा अनेक श्रीमान व अंगरेजी पढ़े लिखे बड़े २ विद्वान तथा हमारे पुराने विचारके कई अगुए भी उपस्थित हुए थे। परिषदमें जिस योग्यतासे साहुजीने काम लिया वह अतीव आदरणीय है। जितने भी प्रस्ताव हुए हैं प्रायः उन सब पर विरोध, संशोधन आदि हुआ था परन्तु अंतमें सभापतिजी इस तरह इसका निकाल कर देते थे कि जिससे किसी भी प्रस्ताव पर मत ही लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती थी और सब प्रस्ताव सर्वानुमतसे ही पास होजाते थे। परिषदमें कुल १६ प्रस्ताव हुए हैं जो आगे मुद्रित हैं वे पढ़नेसे हमारे पाठकोंको मालूम होगा कि इसवार ऐसे कई प्रस्ताव भी हुए हैं जो बिलकुल नवीन हैं व जैन समाजमें जाग्रति व सुधार करनेवाले हैं इसलिये उनपर हम यहां कुछ आवश्यक निवेदन करना चाहते हैं।

दूसरा प्रस्ताव ऐसा है कि हरएक जैन स्कूल

व बोर्डिंगोंमें अंगरेजी पढ़े लिखे जैन विद्वान वर्षमें दो बार जाकर जैन धर्मपर व्याख्यान दे। जिन उत्साही विद्वानोंको इस सेवाके करनेका भाव हो वे इस कार्यके मंत्री बा० बलवीरचंद वकील मुजफ्फरनगरको लिख सकते हैं। वर्षमें थोड़ासा समय इस कार्यके लिये निकालना अंगरेजी पढ़े लिखे विद्वानोंको मुश्किल नहीं होगा और उनके व्याख्यानोंसे विद्यार्थियोंपर जैन धर्मकी विशेष छाप पड़ेगी।

तीसरा प्रस्ताव ऐसा है कि जैनधर्मकी एक छोटीसी पुस्तक ब्र० सीतलप्रसादजी विद्वानोंके संशोधन पूर्वक बनावें जिसमें जैन धर्मकी प्राचीनता व जैन सिद्धांतका परिचय हो व उसको हिंदकी हरएक भाषामें प्रकट करके उसका प्रचार सारे हिंदमें करें। यह प्रस्ताव अतीव महत्वपूर्ण व नवीन है। इसपर सहारनपुर जिलेके भाइयों जो छापेके विरोधी हैं उन्होंने विरोध किया था परन्तु उनको अच्छी तरहसे समझाने पर वे भी इस कार्यमें सहमत होगये थे यह प्रकट करते हुए हमें बड़ा हर्ष होता है।

चौथा प्रस्ताव मारवाडी व देशी अग्रवालमें कन्या लेनेदेनेका है जो उचित ही हुआ है।

पांचवा प्रस्ताव जैन संख्या ह्रासके उपायका है। इसके लिये जो कमेटी नियुक्त हुई है उनको अब कुछ कार्य करके दिखाना चाहिये। आशा है इसके मंत्री ला० रतनलालजी जैन वकील परिश्रमपूर्वक इस कार्यकी अमली कार्रवाई करेंगे।

छठा प्रस्ताव मंदिरोंमें व जनतामें शुद्ध स्वदेशी सूती वस्त्र ही वापरनेका है। अर्थात अतीव अशुद्ध रेशम व अशुद्ध सूती वस्त्रके चंदोवे, वेष्टन आदि मंदिरोंमें न वर्ते जावे अर्थात् जो हो उनको भी बदल दिये जावे तथा हरएक भाई बहिन भी शुद्ध सूती वस्त्रका व्यवहार करें। यह अहिंसा परमो धर्मः माननेवाले जैनियोंके लिये कैसा उत्तम प्रस्ताव है और इसको पूर्ण अमलमें लानेकी आवश्यकता है वरना हम जैनों अजैनोंके समक्ष हंसीके पात्र होंगे।

सातवां प्रस्ताव जैन इतिहास तैयार करनेका है जिसकी आवश्यकता वर्षोंसे मालूम हुई है। आशा है इसके मंत्री बा० हीरालालजी एम० ए० इस कार्यको शीघ्र ही अमलमें लावेंगे।

आठवां प्रस्ताव जैन धर्मप्रचारके लिये उपदेशक विभाग खोलनेका है जिसमें वैतनिक तो क्या परन्तु अवैतनिक उपदेशक द्वारा धर्मप्रचारका यत्न हो। हर्ष है कि प्रस्ताव पास होनेके समय ही बा० जुगलकिशोरजी आदि १०-१२ महाशयोंने आनररी तौरसे वर्षमें महिने दो महिने पंद्रह दिन अपने खर्चसे उपदेशार्थ भ्रमण करनेकी प्रतिज्ञा की है। आशा है अन्य विद्वान भी इसका अनुकरण करेंगे।

नवां प्रस्ताव तीर्थोंके झगड़े मिटानेको उद्योग करनेका है। देखे इसका क्या अमल होता है?

दशवां प्रस्ताव बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय आदि बंद करनेका है उसमें नवीन विशेषता यह हुई है कि ऐसे विवाह हो उनमें असहकार किया जाय अर्थात् उसमें किसीको शामिल नहीं होना चाहिये। हम समझते हैं बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय आदि रोकनेका यह असहकारका उपाय बहुत ही

उपयुक्त होगा व करनेवाले शर्मींदे होकर दूसरी वार ऐसा कार्य नहीं करेंगे । जातिच्युत और दंडसे यह उपाय सबसे बढ़कर है कि ऐसा कोई कार्य करें उनके यहां लड्डू खाने, जलूसमें जाने आदिमें बिलकुल शामिल ही न होवें ।

११वां प्रस्ताव व्यर्थव्यय रोकनेका है । इसकी ६ कलम हरएक पाठक विचारपूर्वक पढ़ें व उसका अपनी२ बिरादरीमें अपील करनेका दृढ़ प्रयत्न करें ।

१२वां प्रस्ताव ७०००)के बजटका है जिसमें करीब १०००) ही परिषद्में आये थे और द्रव्य विना सब प्रस्तावोंकी असली कार्रवाई कैसी हो सकेगी इसलिये श्रीमानोंका फर्ज है कि परिषदको द्रव्य सहायता भेजकर कार्यकर्ताओंको उत्साहित करें ।

१३ वां प्रस्ताव—वेदी प्रतिष्ठाऐं कम व सादगीसे करनेका तथा दावत व गिंदोंडाका तथा अन्य रसमोंके रिवाजोंके बंद करनेका है इस पर समाजको विचारना चाहिये और अब इस दिशाको समयानुकूल बदलना चाहिये । आवश्यक वेदीप्रतिष्ठाएं अवश्य हों परन्तु वे सादगीसे होंनी चाहिये जिससे कम खर्चमें काम हो जावे ।

१४वां प्रस्ताव छात्रवृत्ति फंड खोलनेका है इसपर तो श्रीमानोंको बिचार करनेका है । आशा है इस विषयमें अन्य श्रीमान् लोग स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजीका अनुकरण करेंगे ।

१५ व १६ वां प्रस्ताव तो परिषदकी प्रबंध कमेटी व नियमावली बनानेका है । आशा है कि कार्यकर्तागण शीघ्र ही नियमावली बनाकर परिषदका कार्य सुचारु रूपसे करते रहेंगे । अंतमें एक बात हम अवश्य कहेंगे कि परिषदके हेतु व उद्देश प्रचारमें लानेके लिये परिषदने जो "वीर" नामक पाक्षिकपत्र ब्र० सीतलप्रसादजीके संपादकत्व व बा० कामताप्रसादजीके उपसंपादकत्वमें प्रकट करना प्रारम्भ किया है व जो उत्तम उपयोगी लेखोंसे अलंकृत होकर हर पक्षमें निकलता है उसको दि० जैनके हरएक पाठकको बिजनौरसे अवश्य मंगाना चाहिये । वार्षिक मूल्य सिर्फ १॥) वार्षिक है जो अतीव अल्प है ।

परिषदके मंत्री ला० रतनलालजी जैन वकील बिजनौर अतीव उत्साही व धर्मप्रेमी होनेसे परिषद अपने कार्मोंमें भविष्यमें बहुत सफलता प्राप्त करेगी ऐसी सम्भावना है इस लिये सारी जैन समाजको इसको अपनाना चाहिये ।

राजगिरिमें दिगंबरियों पर दावा— हमारे श्वेतांबर जैन भाइयोंने फिर और एक नया झगड़ा खड़ा कर दिया है अर्थात राजगिरिक्षेत्रके विषयमें १० दिगंबर जैनोंपर बांकीपुरकी कोर्टमें दावा दायर किया है कि राजगिरिका पहाड़ सर्व मंदिर, जमीन रस्ताओ वगेरहपर श्वेतांबरी जैनोंकी मालिकी है । दिगंबरोंका इसमें कोई भी हक नहीं है कि वे किसी इतजाममें दखल करें । इसलिये श्वेतांबर जैन ही राजगिरि तीर्थके मालिक माने जावे आदि । इस केसकी तारीख ७ जूनको है । उस दिन दिगंबरियोंकी ओरसे बचाव नामा पेश होगा । हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटी इसके लिये बहुत कोशिश कररही है ।

जैन समाचारावलि।

केशरियाजीमें ध्वजा दंड नहीं चढ़ा—कई दिनोंसे सुननेमें आता था कि वैशाख सुदी १को केशरियाजीमें उदैपुर रियासतकी ओरसे वैष्णव रीति अनुसार ध्वजादंड चढ़नेवाला था इसके विरोधमें हमारी तरफसे अनेक तार चिट्ठियें पहुंची थीं तथा रा० ब० सेठ टीकमचंदजी, रा० ब० नांदमलजी, सेठ ठाकोरदास भगवानदास जौहरी, सेठ राजमलजी सेठी आदि केशरियाजी व उदैपुर पधारे थे तथा एक भाई तो सत्याग्रह करनेको पहुंचा था जिससे फिलहाल ध्वजादंड चढ़ना बन्द रहा है। सेठ टीकमचंदजी साहबने उदैपुरमें कुंवर साहबसे मिलकर इस विषयकी चर्चा की थी व आगे महाराजाको भी मिलनेवाले हैं। श्वे० जैनोंकी ओरसे एक बेरिस्टर व दस पांच साधु भी वहां पहुंचे थे परन्तु झगड़ा किसी प्रकारसे न होने पाया था ।

विवाहमें दान—दाहोदमें अभी विवाहके समय इस प्रकार दान हुआ था—कोठारी पन्नालाल दलीचंद ५१) पाठशाला व १५०) मंदिरजी व अन्य, संस्थाओंको लूणजी चन्दालालजी १०१) पाठशाला व १०२) अन्य सेठ चुन्नीलाल हंसराज १९) पाठशालाजी कन्हैयालाल, ३१) पाठशाला

वर्धामें—सेतवाल जैन सभाकी ओरसे 'सेतवाल सुदर्शन' मासिक प्रकट होनेवाला है।

सेठीजीके पुत्रका वियोग—हमारे चिर परिचित पुराने समाजसेवक पं० अर्जुनलालजी सेठीके इकलौते पुत्र प्रकाशचंद सेठीका जोधपुरमें देहान्त होगया। प्रकाशचंद्रजी भी २० वर्षकी आयुमें राष्ट्रीय कार्योंमें खूब भाग ले रहे थे। आप हिन्दीकी कविताएं भी अच्छी बनाते थे। सेठजीको प्रकाशचंद्रजीके वियोगसे बड़ा आघात पहुंचा है।

दो नए क्षुल्लक—बाहुबलि पहाड़पर मुनि शांतिसागरजीके केशलोंचके समय ब्र० खुशालचंदजी व ब्र० हीरालालजीने क्षुल्लक पद धारण किया है। दोनोंके नाम अब क्रमशः चंद्रसागरजी व वीरसागरजी रखे गये हैं।

सिद्धवरकूट—में मुनि चन्द्रसागरजीने वैशाख सुदी ९ को केशलोंच किया था तब ७०० नरनारी उपस्थित हुए थे।

पपौरा—की पाठशालाकी द्रव्याभावके कारण टूटनेकी संभावना हो रही है। बुंदेलखंडके भाइयोंका कर्तव्य है कि वे पं० मोतीलालजी वर्णी द्वारा अतीव परिश्रमसे स्थापित इस पाठशालाको सहायता देकर चालू ही रक्खें।

मलकापुर—में श्राविका सुबोध पाठशालाका उत्सव जैनमहिला रत्न श्री० ललिताबाईके सभापतित्वमें ता० २८-४-२४ को हुआ था जिसमें ललिताबाईने पाठशालाके कार्यसे संतोष प्रकट करके अध्यापिका प्रभावतीबाईके कार्यकी प्रशंसा की थी।

महाविद्यालय—ब्यावरमें गरमीकी छुट्टी आषाढ वदी २तक हुई है। इसमें प्रवेशेच्छुक १० विद्यार्थियोंकी आवश्यकता है।

सूरत-नी श्राविकाशालानी परीक्षा त्यागी देवसागर व सुखानंदजी ब्रह्मचारीए ता० ९ मईने दिने लईने अतीव संतोष प्रकट कर्यो हतो। हाल एनो २९ बालिकाओ अने ३० श्राविकाओ लाभ ले छे।

महावीरजीके मेले-में इस वर्ष चैत्र सुदी १९ पर क्षेत्रकी सुव्यवस्था करनेके लिये एक बड़ी सभा रा० बा० सेठ कल्याणमलजीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें १० महाशयोंकी कमेटी प्रबंधके लिये नियत हुई है जिसके मंत्री रामचंद्र खिंदुका जैपुर हुए हैं तथा धर्मशालाकी मरम्मतके लिये अपील होने पर १००१) सेठ कल्याणमलजी, २९१) सेठ हीरालाल पाटनी, २९१) वीरसेवक मंडल जैपुरने भरे थे।

पुरातन शहर मांडू-ब्र० गेबीलालजी अपने भ्रमणके हालमें लिखते हैं कि मैंने अभी धर्मपुरीके पास मांडू (मांडलपुर) नामक पुरातन शहर देखा तो मालूम हुआ कि लोग बम्बई कलकत्ताको बड़ा मानते हैं परंतु यह तो ३६ कोस लम्बा चौड़ा किला दरवाजा सहित मजबूत बना है। पांच ९ खंडके मकान हैं जिनके २ मंजल तो जमीनमें हैं। तमाम काम पत्थरका बना है। बड़े २ बाजार हैं। बड़ा जैन मंदिर भी था जिसमें जमीनसे प्रतिमा निकली थी वह दि० जैनोंकी संभाल न होनेसे श्वेतांबरी होगया है। मांडू महादेवका स्थान भी यहां देखने योग्य है।

हिंसा बंद-काशीपुर, पचमान व करौलीमें गत रामनौमीपर होती हुई बलि हिंसा जीवदया सभा आगराके प्रयत्नसे बहुत अंशोंमें बन्द हुई थी।

काशी हिन्दू विश्व विद्यालय-में फिझीक, केमीस्ट्री, जियोलोजी, बायोलोजी व माइनिंगकी शिक्षा दी जाती है। उच्च कोटिकी संस्कृत शिक्षाका भी प्रबंध है। जो जैन विद्यार्थी इस विद्यालयमें प्रवेश होना चाहे वे नीचेके पतेसे अंग्रेजीमें पत्र लिखनेपर सब प्रकारकी सहायता ले सकते हैं। मईके अंततक आगमनकी सूचना देनी चाहिये। के० जिनराज हेंगडे बा० मंत्री जैन एसोशियेशन काशी हिन्दू विश्व विद्यालय-काशी।

महावीर जयंती-इस वार चैत्र सुदी १३को महावीर जयंती उत्सव सूरत, आगरा, ललितपुर, विखरोन, कारंजा, शिवपुरी, गोटिटोरिया, कुंथलगिरी, सोलापुर, सुजानगढ़, जालंदर, कलकत्ता, नागपुर, रामपुर, नातेपुते, वर्धा, ननानपुर, बाकरोल, सागर, सुंथरामपुर, राणापुर, आदि स्थानों पर मनाया गया था।

ऋषभ ब्र० आश्रम-का वार्षिकोत्सव वैशाख सुदी ३ को होनेवाला था, परन्तु कारणवशात् इसवार स्थगित रखा गया है।

गोहानामें जैन वनिताश्रम-देहली निवासी ला० हुकमचंद जगाधरमलकी विधवा सुपुत्री ज्ञानमतीने अपने नामसे गोहानामें वैशाख सुदी ३को जैन वनिता आश्रम खोल दिया। मुहूर्त ब्र० शीतलप्रसादजीने कराया था। पं० मगनबाई व पं० चंदाबाई भी इस मौकेपर पधारी थी। इसमें कुमारी विधवा सधवा तीनों प्रकारकी श्राविकायें प्रवेश की जायंगीं। कमसे कम ९ वर्षकी कुमारिका तक प्रवेश हो सकेगी व समर्थसे ६) मासिक लिये जायगे।

पंजाब प्रां० सभा-पानीपतमें चैत्र सुदी ६-७-८ को पंजाब दि० जैन प्रांतिक सभाका प्रथम अधिवेशन श्रीमान् ऑ० ला० प्यारेलालजी जैन वकील देहलीके सभापतित्वमें सफलता पूर्वक होगया। स्वागत सभापति रा० ब० ला० लक्ष्मीचन्दजी व सभापति बाबू प्यारेलालजीका व्याख्यान समयानुकूल बहुत ही योग्य हुआ था। कुल १७ प्रस्ताव हुए हैं जिनमेंसे महत्वके ये हैं-(१) सभाके प्रचारार्थ पंजाब प्रान्तमें जिला सभा व जिलाओंमें तहसील सभाएं स्थापित की जावें (२) दो उपदेशक रखे जावे (३) वेश्यानृत्य, बागबिहारी, आतिशबाजी, बूर, बखेर आदि बन्द हो (४) नरनारी समाजमें शारीरिक बलकी स्थिरता व आर्थिक लाभके लिये व्यायामशाला खोली जावे, प्रत्येक घरमें अन्न पीसनेकी चक्की, कातनेके लिये चरखे व बुननेके लिये करघे रखे जावें तथा शुद्ध सादा भोजन व शुद्ध स्वदेशी वस्त्रोंका उपयोग करके सादा जीवन व्यतीत करे (५) संख्या ह्रासके कारण जाननेके लिये कमेटीकी नियुक्ति (६) मंदिरोंमें शुद्ध स्वदेशी वस्त्रसे प्रक्षाल की जाय तथा शास्त्रके वेष्टन शुद्ध स्वदेशी वस्त्रके ही बनाये जांय (७) सरकारी खाते व स्कूल कोलेजोंमें अनंत चतुर्दशीकी छुट्टी दीजाय (८) युनीवर्सिटियोंमें जैन साहित्य व व्याकरणके ग्रन्थ प्रवेश किये जांय। (९) विवाहके समय कन्याकी उम्र १३ व वरकी उम्र १६ वर्षसे कम न हो (१०) सर्व कौंसिलों व म्यूनिसिपालिटियोंमें एक २ जैन सभासद चुनावसे नियत किया जाय आदि।

नीमचमें मालवा सभा-नीमचकी छावनीमें वेदी प्रतिष्ठाके साथ २ दि० जैन मालवा प्रा० सभाका २० वां अधिवेशन शेठ देवीचंदजी मंदसोरके सभापतित्वमें चैत्र सुदी ११-१२को होगया जिसमें सर सेठ हुकमचंदजी, ब्र० गेबीलालजी आदि खास पधारे थे। इसमें कुल ८ प्रस्ताव इस प्रकार पास हुए हैं-(१) ला० जम्बूप्रसादजी, पन्नालालजी न्यायदिवाकर, ब्र० ज्ञानानंदजी आदिके मृत्युके लिये शोक। (२) बाल सगाई, बाल विवाह (१९ वर्षसे कम वर व ११ वर्षसे कम उम्र कन्याकी होना) वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय, व्यर्थव्यय आदि बंद करनेके लिये पंचायतें कड़ा नियम बनावें। (३) प्रत्येक दि० जैन मंदिर व पंचायतीके प्रबंधकर्ता अपने २ जिम्मेका हिसाब प्रतिवर्ष प्रकाशित करें (४) दि० जैन धर्म स्वीकार करनेवाले व अपने राज्यमें हिंसा बंद करनेवाले ठाकुर क्रूरसिंहजीको धन्यवाद (५) सर सेठ हुकमचंदजीको १ लाख रु०के विशेष दानके लिये धन्यवाद, (६) सं० १९५०के लिये २७५००)का बजट (१० खातोंके लिये) पास किया जाय (७) बजट पूर्तिके लिये फंड किया जाय, (८) **ला० हजारीलालजी** नीमच छावनी (मुनीम सर सेठ हुकमचंदजी)को धर्म व जाति सेवाके लिये "**जैनजातिभूषण**"का पद दिया जाय। सभामें करीब ८००) का ही फंड हुआ था।

शास्त्र दान-जीवदया सभा आगराको ला० मुसद्दीलाल अमृतसरने अहिंसाविषयक पांच हजार ट्रेक्ट खरीद करके दिये हैं तथा १०००) ट्रेक्ट वितरण विभागको दिये हैं।

मुजफ्फरनगरमें महिला परिषद्-मुजफ्फरनगरके मेलेमें भा० दि० जैन महिला परिषदका १३ वां अधिवेशन दानशीला श्रीमती बेसरबाईजी बड़वाहके सभापतित्वमें अतीव सफलता पूर्वक होगया। श्रीमती पं० मगनबाईजी, पं० चंदाबाईजी, रामदेवीबाई, गोपीबाई, संजोदेवी, लाजवंतीवाई, ज्ञानवतीबाई खास पधारे थे। परिषदकी कुल ४ बैठकें हुई थीं जिनमें बाईयोंको अच्छा धर्मोपदेश हुआ व नीचे लिखे प्रस्ताव पास हुए हैं व परिषदको ९०७) की सहायता मिली व ९१ ग्राहक जैन महिलादर्शके होगये। प्रस्ताव (१) कन्याशालाओंकी सुव्यवस्थाके लिये एक इन्सपेक्टर बाई अथवा वृद्ध भाईको रखा जाय (२) बहिनें महीन विदेशी वस्त्र पहनना छोड़ें व धन तथा धर्मको बचानेके लिये शुद्ध व स्वदेशी खद्दरके वस्त्र पहिनें (३) विधवा व्हेनें संतान रहित होनेपर गोद लेवे तो आधी सम्पत्ति अन्यथा सर्व संपत्तिका उपयोग स्त्री शिक्षा प्रचारमें करे (४) दो जैन स्त्री उपदेशिकायें (प्रौढ अवस्थाकी) उपदेशार्थ रखी जावें इसके लिये १२००) वार्षिकका प्रबंध किया जाय (५) श्री सौ० कंचनबाई धर्मपत्नी सर सेठ हुकमचंद्रजीको स्त्री समाज सेवाके उपलक्ष्यमें **दानशीला** व श्रीमती **ललिताबाईको** **जैनमहिलारत्न**का पद दिया जावे-(६) देशमें स्त्री व बच्चोंकी बढ़ती हुई मृत्यु संख्याको कम करनेके लिये हरएक पाठशाला व आश्रमोंमें वैद्यकीय पुस्तकें पठनक्रममें रखी जांय (७) श्राविकाओंको द्रव्यसंग्रह, रत्नकरण्ड व तत्वार्थकी परीक्षाके बाद अर्थ प्रकाशिका, गोमट्टसार व पंचास्तिकाय पढ़ना चाहिये व उनकी परीक्षा लेनेके लिये भी माणिकचंद परीक्षालयको सूचना।

राणापुर-में मुनि शांतिसागरजीके उपदेशसे पाठशालाको २११४) व सागवाड़ा विद्यालयको ३७२) मिले थे।

गिरनारजी-में तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे मुनीम रखनेका प्रबन्ध होगया है। अब प्रबंध सुधरनेकी पूर्ण उम्मेद है।

रांची-में शिखरजीका ईनकसन केस चालू है। दोनों ओरसे गवाह होगये हैं। इसमें बैरिष्टर चंपतरायजी व बा० अजितप्रसादजी वकील निःस्वार्थ वृत्तिसे कार्य कर रहे हैं जिससे हजारों रुपयेका बचाव हमको हो रहा है। दोनों ओरकी बहस ता० १३ मईको पूर्ण हो गई और अब शीघ्र ही केसका फैसला मिलेगा।

अंतरीक्षजी-में दि० मुनीम व पुजारीपर श्वे० जैनोंने फौजदारी केस चलाया है जो चालू है।

श्रुतपंचमीपर भवनका अधिवेशन-ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन बम्बईका द्वितीय वार्षिक अधिवेशन आगामी ज्येष्ट सुदी ५ को होगा जिसमें सालभरका कार्य विवरण व आम व्यय सुनाया जाकर आगामी सालका कार्य निश्चित होगा। सब भाई अवश्य पधारें। ठाकुरसीदास जैन, मंत्री।

महावीर-केवलज्ञान जयंतीका उत्सव सम्यक्तवर्द्धिनी सभाकी ओरसे सोलापुरमें वैशाख सुदी १०को हुआ था। मंदिरोंमें पूजन व रोशनी हुई थी।

वर्तमानमें आयुर्वेदकी आवश्यक्ता और उसकी उपयोगिता ।

वर्तमान संसारमें जब हम सारे भारतवर्षकी समस्त प्रजापर दृष्टिपात करते हुए, उसकी आगामी आकांक्षाओंको देखते हैं और प्रजाकी आवाजोंको अपने कर्णगत करते हैं, तो चारों तरफसे स्वदेशी शब्दकी ही तुमुलध्वनि सुनाई पड़ती है—याने प्रजा जहांतक सब प्रकारकी देशी वस्तुएं मिलें उन्हींका ही उपयोग करना चाहती है और विदेशी वस्तुका त्याग करना चाहती है। सो वास्तवमें ऐसा होना ही चाहिये क्योंकि यह तो प्राकृतिक नियम है कि जहांका मनुष्य पैदा हुआ होता है, उसी देशकी बनी वस्तुओंसे उसकी प्रकृति सुखमय रह सक्ती है। अतएव भारत वासियोंको भारतवर्षकी बनी हुई वस्तुओंकी अभिलाषा होना तो स्वाभाविक ही है।

अब यदि ऐसे सुअवसरपर (जब कि समस्त भारतवर्ष समस्त प्रकारकी स्वदेशी वस्तुओंका अभिलाषी हो रहा है।) हम लोग न चेतेंगे और भारतकी मांग पूरी न करेंगे तो प्रजाको परवश होकर विदेशी वस्तुओंसे ही अपनी मांग पूरी करना पड़ेगी। अतएव हमारा इस समय पहिला फर्ज है कि जिस किसी प्रकार भारतवर्षकी मांग पूरी करें और अपना पैसा अपने ही घरमें रक्खें—दूसरोंके हाथमें नहीं दे देवें।

अब हमको यहां पर यह विचार करना है कि भारतवर्षमें किस वस्तुकी अत्यन्त जरूरत है जिसकी कि हम शीघ्र पूर्ति करें। वह हैं—१ औषधि २ कपड़ा, ३ लोहेका सामान, ४ खिलोना वगैरह। पाठक महाशयो ? पहिले जमानेमें यही भारतवर्ष अपने देशकी मांग पूर्ण करते हुए और २ देशोंकी मांग पूर्ण करता था, किन्तु वर्तमानमें वही भारतवर्ष अपने देशकी ही मांग पूर्ण न करके पर मुखापेक्षी बन रहा है इसका कारण अतिरिक्त एक आलस्यके और क्या हो सक्ता है ? अस्तु—

पाठक महाशय ! उपर्युक्त चारों विषयोंमेंसे मैं सिर्फ पहिले विषय अर्थात् औषधिका ही व्याख्यान करूंगा, शेषका नहीं, क्योंकि "शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्" इस ऋषिवाक्यके अनुसार जीवमात्रको शरीरकी रक्षा करना पहिला कर्तव्य है और शरीरके स्वस्थ रहनेसे ही धर्मकी सिद्धि हो सक्ती है जो अन्यथा नहीं।

अब हमको यहां औषधिकी आलोचना करते हुए यह भी विचार करना है कि हम—भारत वासियोंका अच्छा स्वास्थ्य स्वदेशी औषधियोंसे रह सक्ता है या विदेशी औषधियोंसे, क्योंकि संप्रति हमारे समक्ष यही समस्या उपस्थित है और दोनों पक्षोंपर विचार करके जो पक्ष हमारे अनुकूल हो हमारे धर्मका रक्षक हो—हमारे धनका रक्षक हो उसी पक्षको स्वीकार करें। पाठकों ! वास्तवमें सूक्ष्मदृष्टिसे विचारा जाय तो यही सिद्ध होगा कि जो मनुष्य जिस देशकी भूमिमें उत्पन्न होकर जिस देशकी आबहवामें परिपालित हुआ है उस मनुष्यका स्वास्थ उसी देशकी उत्पन्न हुई औषधियोंसे ही निरोग रह सक्ता है अन्यथा नहीं। जैसे कि जलमें उत्पन्न हुई मछली जलहीमें स्वस्थ रह सक्ती है न कि

थलमें। इत्यादि-इसलिये यही सिद्ध हुआ कि हम भारतवासियोंको विदेशी औषधी स्वास्थप्रद नहीं है-प्रत्युत स्वदेशी औषधी ही हमारे स्वास्थ्यको सुखप्रद है। दूसरा कारण एक यह भी है कि विदेशी औषधियोंमें हमारा पैसा भी अधिकांश खर्च होता है, क्योंकि हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जितने दाममें विदेशी औषधिसे १ रोगी अच्छा हो सक्ता है-उतने ही दाममें स्वदेशी औषधीसे कमसे कम २० रोगी सरलता पूर्वक शीघ्रतया अच्छे हो सक्ते हैं, जिसके ४ उदाहरण मैं पाठकोंके समक्ष उपस्थित करता हूं।

१-उदाहरण मामूली फसली बुखारपर अंग्रेजी दवा मलेरियाक्योर (फसली बुखार नाशक) १ शीशीका दाम ॥=) है-किन्तु हमारे आयुर्वेदी शास्त्रमें फसली बुखारमें)॥ पैसेका काढा ही काफी है-याने गिलोय, धनियां, नीमकी छाल, पद्माक चंदन, लालचंदन ये पांचों औषधी बजारसे)॥ पैसेमें ले आवे और काढा बनाकर ४ समय पिलानेसे बुखार चला जाता है

२-उदाहरण, मामूली खांसीपर अंग्रेजी दवा कफक्योर (खांसी नाशक) १ शीशीका दाम ।=) है, किन्तु हमारे यहां)। एक पैसेकी दवाईमें खांसी चली जाती है-भटाकटाईका काढा बनाकर उसमें थोडासा पीपलका चूर्ण डालकर पिलादो बस खांसी साफ हो जायगी।

३-उदाहरण, वदहज्मीपर अंग्रेजी दवा डिसपेप्सीयाक्योर (वदहज्मीनाशक) १ शीशीका दाम ॥) है-किन्तु आयुर्वेद शास्त्रमें क्षार चूर्ण या लवणभास्कर ही काफी है, जिसकी)॥ पैसेमें कमसे कम ८ खुराक चूर्ण बनेगा।

४-उदाहरण-पेटके दर्दपर अंग्रेजी दवा कौलिकक्योर (पेटका दर्द नाशक) १ शीशीका दाम ॥) है-किन्तु आयुर्वेद शास्त्रमें)। पैसेका शुद्ध कुचला क्षार चूर्णके साथ खानेसे ही दर्द साफ हो जाता है इत्यादि। सभी प्रायः अंग्रेजी औषधियां ऐसी हैं जिनकी की वीस२ गुणी चालीस२ गुणी कीमत है, जिनका व्याख्यान मैं यहां पर नहीं कर सक्ता हूं।

यह तो बात हुई द्रव्य बचानेकी अपेक्षासे। अब सोचिये जरा धर्मपर जिसकी बदौलत कि हम अपने सबके सिरमोर कहते हैं।

पाठकों ! धर्म ही एक वस्तु है कि जिसकी बदौलत यह संसार स्थिर है-यदि कुछ सुख है तो एक धर्महीके रहनेसे। यदि शांति है तो एक धर्महीके रहनेसे। यदि प्रेम है तो धर्म हीके नातेसे। यदि प्राणीमात्रका जीवन है तो सब धर्म मात्रके सहारेसे। जब इस प्रकार धर्मका ही सब जगह सम्बन्ध है तब धर्मकी रक्षा करना हमारा पहिला कर्तव्य है अर्थात् हमको यहांपर यह विचार करना है कि हमारे धर्मकी रक्षा विदेशी औषधीसे हो सक्ती है या स्वदेशी औषधीसे। बस दोनोंमेंसे जिससे धर्मकी रक्षा हो वही ग्राह्य है और जिससे धर्मकी हानि हो वही त्याज्य है। अतएव "अहिंसा परमोधर्मः" यह जो धर्मका लक्षण जिसको कि समस्त भारतवासी मानते हैं-इस धर्मके लक्षणके अनुसार तो विदेशी औषधी त्याज्य हैं और स्वदेशी औषधी ही ग्राह्य है, क्योंकि फीसदी ७५ विदेशी औषधी ऐसी हैं जिनमें कि प्राणियोंके मांसका संसर्ग है।

अतएव जब विदेशी औषधियोंमें मांसका संसर्ग सिद्ध हुआ तब कौनसा ऐसा भारतवासी होगा जो ऐसा जानकर भी मद्य मांस मिश्रित विदेशी औषधी सेवन करेगा, क्योंकि यह धर्म प्रधान भारतवर्ष है, जहांके हम रहनेवाले हैं हम कभी भी धर्मका परित्याग नहीं कर सक्ते, चाहे धर्मके लिये यह प्राण भी चले जांयें किंतु धर्म नहीं छोड सक्ते।

अतएव प्यारे पाठको ? आजसे इस बातकी प्रतिज्ञा ले लो कि हम विदेशी वस्तुओंका सेवन नहीं करेंगे किन्तु शरीरको निरोग रखनेके लिये संयम पूर्वक रहकर परमितभोगी होते हुए धर्मका परिपालन करते हुए स्वदेशी औषधियोंका ही सेवन करेंगे।

प्रिय पाठको ! जब हमारी प्रजा स्वदेशी औषधियोंकी तरफ झुक जायगी तब हमारे वैद्यों और हकीमों तथा विशेषकर डाक्टर महोदयोंका क्या कर्तव्य होगा ? सो भी सुनिये।

मेरे पूज्य वैद्यराजो तथा मानवर्य्य हकीम महोदयों! तथा डीयर डाक्टर महोदयों ! अब आप लोग स्वदेशी औषधिओंका प्रचार करनेमें तत्पर हो जाइये क्योंकि समस्त भारतवर्षीय प्रजा अब आपके ही आधीन है अतः आप लोगोंका कर्तव्य है कि शुद्ध भावसे स्वदेशी औषधियोंका प्रचार करें और विद्यार्थियोंको आयुर्वेद पढ़ावें तथा सर्जरीके साथ डाक्टरी भी सिखावें। जिससे प्राचीन आयुर्वेदकी उन्नति होकर भारतवर्षके प्रत्येक घर २ आयुर्वेद शास्त्रानुसार स्वदेशी औषधियोंकी उन्नति हो। तभी आप लोगोंका सुयश जगतमें चन्द्रमाकी ज्योत्स्नाकी तरह प्रकटित होगा। बस अन्तमें यह तुच्छ लेखक पाठकोंसे क्षमा मागता हुआ प्रार्थना करता है कि आप लोग लेखकी त्रुटियोंपर ध्यान न देते हुए लेख गत भावको गृहण करेंगे। और आयुर्वेदकी उन्नतिमें दत्तचित्त होंगे। पाठकोंका-सेवक-

आयुर्वेद भूषण सत्यन्धर जैन वत्सल काव्यतीर्थ।

पद

चन्द्रप्रभु चरणों शीश नवावें (टेक)॥
चन्द्रप्रभु निरखकर तुमको चरणों शिश नमावें।
चन्द्रच्छटा देखकर मनमें अतुल शान्तिता पावें।
(चन्द्रप्रभु चरणों शीश०)

है वह चन्द्र कलंकी विभुवर निःकलंक तुम पावें॥
वह अमृतहि अगदैको दाता आपसे स्वर्गमोक्षको पावें॥
"चन्द्रप्रभु चरणों शीश०"

वह चन्दा कोरा ही चंदा रविकर स्वेत दिखावे।
अनुपम ज्योति अनोखी आपकी अतुल शांति बरसावै॥
"चन्द्रप्रभु चरणों शीश०"॥

सेवक दुःखकर पूरि रहो है किंचित शांति न पावे।
शीघ्र कृपा अब करौ प्रभुजी सोषसांग मिल जावै॥
"चन्द्रप्रभु चरणों शीश०"॥

विनीत-

जैन पाठशाला स्या० शांतिनिकेतन } मुन्नालाल विशारद, दमोह सी० पी०।

---

१ औषधिको अमृतदाता है।

दरिद्रताके दुःख।

दरिद्रताके सदृश इस दुःखमयी **क्षणस्थायी परिवर्त्तनशील** जगतमें अन्य दुःख अवनतिके क्षेत्रमें पदार्पण करानेवाले नहीं हैं। शारीरिक मानसिक वाचनिक दुःखोंमें यही दुःख मनुष्यका परम शत्रु है। और यह शत्रु ऐसा बलिष्ठ है कि किसी भी गौरवशाली मनुष्यको आत्म-गौरवसे पतित कर देता है। इस बलिष्ठ कष्टने हिन्दुस्थानियोंको भी बुरी तरहसे सताया है। इस कलिकालके निकृष्ट समयमें प्रायः ऐसे मनुष्य मिलते हैं, जिनके पास शरीरको आच्छादित करनेके लिए वस्त्र नहीं है, उदर-पूर्तिके लिए भोजन नहीं है। जिनको देखकर प्रत्येकका हृदय द्रवीभूत हो जाता है। विचारशील नीतिवेत्ता मनुष्योंने कहा है कि।

दारिद्र्यान्मरणाद्वापि दारिद्र्यमवरं स्मृतम्।
अल्प क्लेशेन मरणं दारिद्र्यमतिदुःसहम्॥

अर्थात् मृत्यु और दरिद्रतामें मृत्युकी अपेक्षा दरिद्रता खराब है। क्योंकि मृत्यु तो अल्प क्लेशसे होती है किंतु दरिद्रता अति दुःख देती है। और भी कहा है कि-

रिक्तस्य हि न जागर्ति कीर्तनीयोऽखिलो गुणः।
हन्त किं तेन विद्यापि विद्यमाना न शोभते॥१॥
स्यादकिंचित्करः सोऽयमाकिंचन्येन वञ्चितः।
अलमन्यैः साकूतं धन्यवक्त्रं च पश्यति॥२॥

अर्थात् निश्चयतः दरिद्रपुरुषके जगत-प्रशंसनीय संपूर्ण सद्गुण प्रकाशित नहीं होते हैं। अफसोस और तो क्या उसकी विद्यमान विद्या भी शोभित नहीं होती है। प्रिय बन्धुवर विशेष तो क्या वह दरिद्रतासे ठगाया हुआ कुछ भी नहीं कर सकता है। वह दरिद्र पुरुष साभिप्राय धनिक मनुष्योंके मुखकी तरफ देखता रहता है।

वाचकवृंद दरिद्रसे सताया हुआ यह मनुष्य धनके लिए तरसता रहता है। एक विचारशील विद्वान् मनुजका कथन है कि-दारिद्र्यात् ह्रियमेतिपरिगतः सत्वान् परिभ्रश्यते। निःसत्वपरिभूयते परिभवान् निर्वेदमापद्यते। निर्विण्णाः शुचिमेति शोकनिरतो बुद्धया परित्यज्यते। निर्बुद्धि क्षयमेत्यहो निधनता सर्वापदामास्पदम्। **दरिद्र मर्त्य विनश्वर पंचपरावर्त्तन शोकमयी संसारमें** स्वःख्यातिको **प्रकाशित नहीं कर सकता।** दारिद्र्यावस्थामें यह मनुष्य **अध्यात्मिक शक्तिसे** भी गिर जाता है। शारीरिक बल होनेपर भी अगर दरिद्रता उसके शिरपर सवार है तो निश्चयतः शारिरिक व आत्म बलसे पतित हो जाता है। शारीरिक व आत्मबलसे पतित मानव अपनेको मनुष्य श्रेणीमें न समझकर शोकसे आतुर होकर नीचावस्थाको प्राप्त हो जाता है। दरिद्र मनुष्यके हृदय-पटलसे पूज्यापूज्य हिताहितका परिज्ञान भी कूचकरजाता है। "विषं सभा दरिद्रस्य" इस कहावतको भी चरितार्थ करदेता है। बंधुवर्य दरिद्र मनुष्य धर्मके कारणोंका परित्याग करके धनार्थ कुत्सित कार्योंमें प्रवृत्त हो जाता है।

चांदमल जैन विशारद, पचार।

सत्संग ।

(લેખક: કે. એન. મીઠાવાલા ઇડર)

સત્–સારી સોબત–સંગ સારી સોબત રાખવી તે તેની શરૂઆત કરવામાં સૌથી ઉત્તમ સાધન જ્ઞાન છે. જ્ઞાન એ એક શકિત છે. કોઈ પણ પદાર્થ વિષે કાંઈ પણ જાણવું તેનું નામ જ્ઞાન છે. જેવી રીતે પાણી વિના અગ્નિ શાન્ત થતો નથી તેમ જ્ઞાન વિના મોક્ષ સુખ મેળવી શકાતું નથી. સત્સંગ એ જ્ઞાન પ્રાપ્તીનો માર્ગ છે. મનુષ્યે સોબત એવી કરવી જોઇએ કે તેનાં કરતાં સામો માણસ કંઇક વધારે જાણતો હોય કે જેથી તેની બુદ્ધિમાં કંઇ વધારો થાય. સારા સોબતીઓના ખરેખરા ગુણ હોય તેનેજ ગ્રહણ કરો. તેમનો વિવેક, ચાલ, સત્ અને મધુરવાણીગ્રહણ કરો સારી સોબત રાખવાથી અન્ય જનોના મનમાં આપણા વિષે સારા ખ્યાલજ આવ્યા કરવાનો એ નિઃસંશય છે. સુજ્ઞ મંડલીમાં ફરવાથી થોડા ઘણા ગુણ પણ આપણામાં આવ્યા વિના રહેવા નથી.

જીંદગીનું સાર્થક સત્સંગજ છે. સૌ લોકોની પ્રીતિ તેનાપર થાય છે. સત્સંગથીજ મનુષ્ય પોતાના ધારેલા ધ્યેયને પ્રાપ્ત કરી શકે છે, જેવી રીતે એક પુષ્પ હોય અને તેની અંદર કીડી રહેલી હોય અને આપણે પૂજા કરતી વખતે જીનેન્દ્ર ભગવાનને ચઢાવીએ તો કીડી પણ ઇશ્વરના પાદમાં જઇ બેસે છે. તેથી તે પણ સદ્‌ગતિને શરણે જાય છે. આ બધો પ્રતાપ શાનો છે. ઉત્તર એટલોજ કે સત્સંગ.

મેઘરાજા દરેક ઝાડપર સરખી રીતે વરસે છે. પણ લીંબડા ઉપર પડેલું પાણી લીંબોડીઓને બનાવે છે કે જેની વાસ પણ ખમાતી નથી. જ્યારે આમ્ર વૃક્ષપર પડેલું તેજ પાણી કેરી જેવા અમૃત ફળને આપે છે. જે ફળ ઉત્તમમાં ઉત્તમ ફળ લેખાય છે. આ બધું ખરેખર સોબતને લીધેજ છે.

સમુદ્રની અંદર વરસાદનું મીઠું પાણી પડવાથી તે પણ ખારૂં થઇ જાય છે. પરન્તુ તે જો સારા નક્ષત્રની અંદર પડે છે તો તે કિંમતી મોતી રૂપે નીવડે છે. કે જેની કિંમત અમૂલ્ય હોય છે.

બે પોપટ હોય અને બન્ને જુદા જુદા ઘેર ઉછરેલાં હોય તો જેવી સોબત હશે તેવાં તે કેળવાશે, કોઇ પોપટ મીઠા અવાજથી આવકાર આપશે જ્યારે તેનો બીજો ભાઇ અપમાનથી રજા આપશે.

નાનું બાળક હોય અને તેની માતા સાથે જીનેન્દ્ર ભગવાનની પૂજા કરવા જતું હોય તો જેમ માતા પુજન વગેરે કરશે તેમ બાળક પણ કરશે અગર જોઇતો રહેશેજ કારણ તેના સંસ્કાર તેનાપર પડે છે. તેનાથી ઉલટું માતા જેવી હશે તેવાજ ગુણ બાળકમાં અવતરશે.

કલાલને ત્યાં દુધ લેવા જતાં પણ દારૂ રૂપ ભાસે છે. કારણકે લોકોની માન્યતા તો એવીજ છે કે કલાલ દુધ વેચે નહિ પણ દારૂ વેચે આ બધું સોબત ઉપર આધાર રાખે છે.

A man is known by the Company he keeps. સોબત તેવી અસર ભારે કિંમતી ભાત એકલો હોય ત્યાં સુધી તે ભાત કહેવાય છે. પણ જો તેની અંદર દાળ પડે છે તો ભાતનું નામ તેમજ જાતી બદલાઇ જઇ ખીચડી એવું નામ ધારણ કરે છે. આ બધું સોબતનુંજ પરિણામ છે. માણસના ગુણ તેની સોબત વડેજ વખણાય છે, માણસ જો જ્ઞાની અને ડાહ્યો હોય પણ જો તેને સારી સોબત ન હોય તો તે અવગતિને પામે છે. જેમ એકલું દુધ હોય કે જેને પીવાથી શરીરના અવયવો મજબુત થાય છે. પણ તેજ દુધની અંદર થોડું ઝેર મેળવ્યું હોય તો પીનારનો તરતજ નાશ કરે છે. માટે સોબત કર્યા પહેલાં ઘણો વિચાર કરો અને પાત્ર જોઇને દાન આપો.

દુઃસંગના રંગથી રંગાએલા મોટા માણસોની મર્યાદાનો પણ નાશ થઇ જાય છે. દુસંગથી બુદ્ધિમાન માણસોની બુદ્ધિ પણ ચલાયમાન થઇ જાય છે–સંગથી રંગ જરૂરથી વળગ્યા વગર રહેતો

નથી. માટે ખોટી સોબતને શરૂઆતથીજ છોડી અને સત્સંગને ગ્રહણ કરો.

धर्मध्वस्तदयो यशश्च्युतनयो वित्तं प्रमत्तः पुमान्काव्यं निष्प्रतिभस्तपः शमदमैः शून्योऽल्पमेधः श्रुतम्।
वस्त्वालोकमलोचनश्चलमना ध्यानं च वांछत्यसौ यः सङ्गं गुणिनां विमुच्य विमतिः कल्याणमाकांक्षति ॥

સારા માણસોની સોબતમાં મનુષ્યોની ઇચ્છા પૂર્ણ કરવાને શા ગુણોની ખામી છે? સારી સોબત ખોટી બુદ્ધિનો નાશ કરે છે, મોહને તોડે છે, વિવેકને વધારે છે, સ્નેહને ઉત્પન્ન કરે છે, નીતિનો જન્મ આપે છે, જ્ઞાનનો વધારો કરે છે, યશને ફેલાવે છે, ધાર્મિક કાર્યો તરફ મનને દોરે છે અને ખોટી ગતિનો નાશ કરે છે.

रूपाबाई स्मारक मंडळनुं
तृतीय वार्षिकोत्सव।

શેઠ પ્રે૦ મો૦ દિગમ્બર જૈન બોર્ડિંગ આશ્રિત શ્રીમતિ રૂપાબાઇ સ્મારક મંડળનું તૃતિય વાર્ષિક અધિવેશન તા૦ ૬–૪–૨૪ ના રોજ બોર્ડિંગના ભવ્ય મકાનમાં જાણીતા દેશભક્ત શ્રીયુત કાકા સાહેબ દત્તાત્રેય બાલકૃષ્ણ કાલેલકરના પ્રમુખપણા નીચે મળ્યું હતું. શરૂઆતમાં મંગલાચરણ તથા સ્વાગત થયા બાદ કાકા સાહેબને પ્રમુખસ્થાન આપવામાં આવ્યું હતું. ત્યાર પછી હિંદુ મુસલીમ ઐક્યતાનું ગાયન ગવાયા બાદ મંડળનો શરૂઆતથી અત્યાર સુધીનો એટલે છેલ્લાં વર્ષનો વિગતવાર રિપોર્ટ ભાઇ શ્રી છોટાલાલ મોતીલાલે વાંચ્યો હતો. ત્યાર પછી સ્વાર્થ ત્યાગ અને સ્વદેશ ભકિતની ભાવનાથી ભરપુર **વીર પ્રતાપસિંહ તથા સેઠ ભામાશાનો સંવાદ** ગાનતાન સહિત વિદ્યાર્થીઓ તરફથી ભજવી બતાવવામાં આવ્યો હતો. ત્યાર બાદ રા૦ રા૦ જીવણલાલ હરિપ્રસાદ દીવાન રા૦ સા૦ બળવંતરાય પરમોદય ઠાકોર, પંડીત મોઝા ગરજી, પંડીત ભુવનેન્દ્ર પ્રસાદજી, સંઘવી વાડીલાલ મુળજીભાઇ વીગેરે વકતાઓ તરફથી મહત્વ પૂર્ણ ભાષણો કરવામાં આવ્યાં હતાં. તે પછી પ્રમુખ સાહેબના પવિત્ર હસ્તે વિદ્યાર્થીઓને નીચે પ્રમાણે ઇનામ વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં.

૧ ભાઇશ્રી છોટાલાલ મોતીલાલને એક **સોનાનું ચાંદ** મંડળ તરફથી તથા પાંચ રૂપીઆ રોકડા બોર્ડિંગ તરફથી તેમણે કરેલી **નિઃસ્વાર્થ સેવા, સદવર્તન અને નિયમિત અભ્યાસ** માટે ભેટ આપવામાં આવ્યા હતાં, તથા બે રૂપીઆ રોકડા ધાર્મિક પરિક્ષામાં ઉંચે નંબરે પાસ થવા માટે માળવા પરિક્ષાલય તરફથી ઇનામ આપવામાં આવ્યા હતાં.

૨ ભાઇ રતીલાલ કસ્તુરચંદને ઉત્તમ **સંવાદ તથા ગાયન** માટે દેઢ રૂપીઓ ઇનામ આપવામાં આવ્યો હતો.

૩ ભાઇ રમણલાલ વીમળશીને એક રૂપીઓ ઉત્તમ સંવાદ માટે ઇનામ આપવામાં આવ્યો હતો.

૪ ભાઇ કેશવલાલ કાળીદાસને આઠઆના ઉત્તમ સંવાદ માટે ઇનામ આપવામાં આવ્યું હતું.

૫ ભાઇ છગનલાલ મોતીલાલને ઉંચા નંબરનું સુતર કાંતવા માટે આઠ આના ઇનામ આપવામાં આવ્યું હતું.

કાકા સાહેબે પોતાના અંતિમ ભાષણમાં કહ્યું હતું કે જે વિદ્યાર્થીઓએ ઇનામ મેળવ્યાં છે તેમને હુ મુબારક બાદી આપુ છું. ભાઇ છોટાલાલના વિષે મેં ઘણું સાંભળ્યું છે. તે ભાઇ વિદ્યાર્થીઓ ઉપર સારી અસર કરી શકયા છે. વિદ્યાર્થીઓને બીજી રીતે પણ મારા ધન્યવાદ છે. જે દેશની સેવા કરે છે અને કેળવણી આપે છે, તેવાં શિક્ષકો પાસેથી આશિર્વાદ મેળવવવો એ ઘણું સારૂ કહેવાય. જો હું રાષ્ટ્રીય શાળાનો વિદ્યાર્થી હોત અને બલુભાઇના શબ્દોમાં મને આશિર્વાદ મળ્યો હોત તો મારૂ માંસ ત્રણ રતલ વધત, આવો આશિર્વાદ

આસાધારણ છે. મુસાફરી કરવાથી ઘણી કેળવણી મળે છે. આચાર્ય પાસેથી કેળવણી લીધા પછી તે મુસાફરીથી પૂર્ણ કરવી જોઇએ. કેળવણી દેશ-સેવા તથા સમાજ સેવાથી પૂર્ણ થાય છે. જૈન ધર્મ એ વિશ્વધર્મ છે અહિંસા તપસ્યા અને સહીસ્ણુતા એ જૈનધર્મના મુખ્ય સિદ્ધાન્તો છે. તમે મને અત્રે બોલાવ્યો ત્યારે મને વિચાર થયો કે તમે એક પરજ્ઞાતિના માણસને શા માટે બોલાવો છો તમારી જ્ઞાતિમાં વિદ્વાન નરરત્નો છે તે છતાં તમે મને બોલાવ્યો, તે બતાવે છે કે તમારૂં હૃદય ઉદાર છે સંકુચીત નથી. સ્મારક મંડળે વિદ્યાર્થીઓમાં નવું ચૈતન્ય રેડવા માંડયું છે. આજ્ઞાધારક પણું પહેલા ઘરમાં અને ત્યાર પછી શાળામાં શીખવું જોઇએ.

વિદ્યાર્થી ભાઇઓ ? તમે જ્યારે મોટા થાઓ ત્યારે જ્ઞાતિઓનું હિત અને દેશનું હિત એકજ દિશામાં વહન થાય એમ કરજો. આજે છઠ્ઠી એપ્રીલ છે. અપમાન સહન કર્યા કરતાં મરીજવું એ ઘણું સારૂ છે. એમ છઠ્ઠી એપ્રીલ આપણને શીખવે છે. હજુ અમૃતસર યાદ આવે છે. કાળા કાયદા યાદ આવે છે. આપણી અશક્તિ આપણને યાદ આવે છે. તે હમેશાં ધ્યાનમાં રાખજો દેશ ભક્ત તથા ધર્મના સાચા સેવકો બનજો, તથા અત્રેથી સારી કેળવણી મેળવી સુખી જીવન ગાળજો.

છેવટમાં શ્રીયુત પંડીત છોટેલાલજીએ મુખ્ય સાહેબનો, પધારેલા સદ્‌ગૃહસ્થનો તથા વિદ્યાર્થી ભાઇઓને આભાર માન્યો હતો. ભાઇશ્રી મણી-લાલ કોઠારીએ આભારની દરખાસ્તને અનુમોદન આપ્યા બાદ પ્રમુખ સાહેબને સુતર હાર પહેરા-વવામાં આવ્યો હતો, અને તે પછી પાન સોપારી બાદ અગીઆર વાગે સભા વિસર્જન થઇ હતી.

લી० સેવક.

શા० અંબાલાલ ચીમનલાલ મંત્રી,
શ્રીમતી રૂપાબાઇ સ્મારક મંડળ
અમદાવાદ.

अहिंसा।

सर्वोच्च धर्म्मोंका यही, सर्वस्व प्राणाधार है।
बस जीवके अनुपम सुखोंका, एक अचल अधार है॥
है प्राण रक्षाके लिये माना, इसे उत्कृष्ट ही।
इसके बराबर जगतमें है, दूसरा कोई नहीं॥
(१)
बस एक प्राणाधार हिन्दू, अरु मुसलमा आर्यका।
सच्ची तमामों धर्म्म अरु है, जैनके आचार्यका॥
प्राणोपमासे वृहद समझो, यह अहिंसा धर्म्म ही।
जिसकी अलौकिक परम द्युति, है गगन हीमें छारही॥
(२)
किन्तु सुक्ष्म गवेषणा युत, देखना हो ध्यानसे।
तौ बिलोको जैन दर्शन," अति ही अपने ज्ञानसे॥
आलस्य बस ही प्राणका जो, घात होता है सही।
बस दोड़ती हिंसा समझलो, अन्य कारण है नहीं॥
(३)
क्योंकि उसके भाव प्राणोंका विमर्दन होचुका।
अरु द्रव्य प्राणोंका हतन, अपने ही करसे खो चुका॥
अन्य जीवोंका हतन हो अथवा, वचना भाग्य फल।
बस भावनाओंमें यहां, समझो जु कुछ होगा सुफल॥
(४)
बस इसीसे है यहां पर, राग भाव विहीनता।
होगी वही अद्भुत अहिंसा, भावकी विस्तीर्णता॥
शुद्धोपयोगी रूप, प्राणोंका, हतन ही जान लो।
नहीं होगी वह जु हिंसा, इसीको पहिचान लो॥
(५)
यदि किसीके गमनमें हो, घत जीवोंका सही।
होश्रेष्टतायुत ध्यान जिसका, मारना बिलकुल नहीं॥
उसके ही निज आघातसे है, जीवका संघार हो।
हिंसा न होगी वह नजो, साक्षात मृत्यु अधार हो॥
(६)
केवल यहां पर प्राण, व्यपरोपण कहोजो सूत्र ही।
तो इसीमें दोष है अतिव्याप्तका आता सही॥
न्यायके अनुसारसे जो दोष कुछ आजायगा।
तो सदा हो पद दलित नहि उचता वह पायगा।

(क्रमागत)
दमोह सी० पी० } मुन्नालाल ।नशांक जैन

नीतिरत्न-माला।

मर्म वाक्य मत उच्चरो, परधन कदा न हर्ण।
स्मरण करो जिन चर्णको, सदाचरो भवतर्ण ५०
रामा पुस्तक लेखनी, परके कर है नष्ट।
कदाचित् आवें लौटि तौ, चुंबित भ्रष्ट रु घृष्ट॥
कविता युवती सोदरा, जानो जन धीधार।
पालें तिनको कवि पितु, परजनके हितकार॥५१
करको भूषण दान है, कंठा भूषण सत्य।
शास्त्र जु भूषण श्रोत्रको, भूषण साधु विरत्य॥
उत्पादक उपकार कर, दायक विद्यादान।
त्रातामय अरु अन्नप्रद, पंच विधा पितु जान॥
दूर हुवे भी निकट है, जो वर्ते जिस चित्त।
जो चितमें नहिं वर्त है, निकट हुवे क्या हित्त॥
न तो देव है धातुमें, नहीं काष्ट पाषान।
देव विराजे भावमें, यातें भाव प्रधान॥५६॥
वाकवाद सम्बन्ध धन, दरशन दार परोक्ष।
यदि चाहो तुम मित्रता, दूरहि करो विमोक्ष॥
अपने समतें मित्रता, करो सदा बुधिवान।
प्रेम, अर्थ, भय, जन्यमें, पूरब सुखकर जान॥५८
ज्ञात नहीं जिस शील कुल, विद्यानाम न धाम।
तिसनरको विश्वास कर, देहु न घर विश्राम॥५९
महा नदीकोपर तरण, महापुरुष संग युद्ध।
भूपति संग विरोध कभि, करो न नरप्रतिबुद्ध॥
देहु इसो निकलत वचन, मानवके गुण पांच।
विनशै ही श्री धी धृति, कीरति रुइ जिम आंचै॥६१॥

दैव विना उद्योगके, करै न कारज सिद्ध।
बिना चलाये बाणके, स्वतः करे नहिं विद्ध॥
व्यसनोत्सव दुर्भिक्षमें, राजद्वार समशान।
राज्य क्रांतिमें रहे निकट, बांधव सो पहचान॥
मन्मथ होत प्रविष्ट ही, प्रथम करै धी नाश।
जिम तस्कर घरमें घुसत, नाशै द्वीप प्रकाश॥
गुण पूजित सर्वत्र हैं, वंश न पूजित होय।
बाहुबलीको सब नमें, मारीचिको नहिं होय॥
मनस्वी धारें अंतरंग, रोष न रहें प्रसन्न।
जिम दरपण भस्मी मले, मुकुलित होय न खिन्न॥
परुषा पैशुन अनृता, और असत परलाप।
भूप न चिंतै नहिं कहै, कहे घटै परताप॥६७
पाप और ऋणको करत, मानें सुख मन लोग।
पर बाढै जब जलधिसम, करें तबै चित सोग॥
अद्‌भुत द्रव तीरथ दरश, परिचय जन सर्वत्र।
धन धी प्राप्ति प्रवास सुख, दुख नहीं मुग्धा तत्र

वहिर्लापिका:—

जिन संबोधनको करें, मुग्धाकौन सुग्रीव।
निरधन किमईच्छा धरें, कृत किमि दुखी सदीव॥
सो जीवै जिस यश प्रसर, कीरति है संचार।
अयश अकीर्ति सहित नर, जीवित मृत संसार॥
वेश्या मुखमंडन तथा, पर्वत नाटक हर्म्य।
युद्धवार ता दूर तें, लगें दूरतें रम्य॥७२॥
इक ले तप दोमें पठन, तीन गान चव गाम।
पांचसात खेती करो, मिलके बहु संग्राम॥७३॥
मात पिता पत्नी शिशु, अतिथि पोषण भार।
है कर्तव गृहिको इतर, यथाशक्ति अनुसार॥
वाद्य नाट्य पुस्तक पवन, द्यूत शक्तिता नार।
तंद्रा निद्रा षष्ट ये, विद्या विघ्न विचार॥७५॥

१ अग्नि।

१ देव, २ तारा, ३ धनम्—४ देवताऽऽराधनम्।

व्याख्यान—

श्रीमान् साहु जुगमंदरदासजी नजीबाबाद, सभापति, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् प्रथम अधिवेशन-मुजफ्फरनगर।

नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते ॥१॥

स्वागतकारिणी समितिके सभापति महोदय, परिषद्के प्रतिनिधि बन्धु, पूज्य ब्रह्मचारियों, देवियो और अन्य सज्जनो !

१—इस भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषदके उत्तरदायित्व पूर्ण सभापति पदको प्रदान कर आप सज्जनोंने जो मेरा गौरव बढ़ाया है इसके लिये मैं आपका आभार मानता हूं। आपने तो अपनी श्रद्धासे मुझे यहां लाबिठाया, किन्तु मैं अपनी असमर्थता और जिम्मेदारीका अनुभव कर रहा हूं। आपने एक ऐसे व्यक्तिको सभापति चुना है कि जिसमें न योग्यता है, न जिसके पास समय है, न स्वास्थ्य अच्छा है और जो समाजके कार्योंसे हताश होचुका है। अच्छा होता यदि किसी कार्यकुशल और सुयोग्य विद्वान्से यह कार्य लिया जाता। मैं केवल नम्रता प्रदर्शित करनेके लिये ही नहीं कहता किन्तु यह मेरा हृद्गत भाव है। इस गुरुतर भारको संभालनेके लिये गत मासमें जब मुझसे कहा गया था तो मैंने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुये उसे अस्वीकार कर दिया था। पुनः मंत्री महोदय तथा मंडलके आग्रह करनेपर ता० ८ अप्रैलको इस पदके स्वीकार करनेके लिये मुझे बाध्य होना पड़ा, और उसी दिनसे अपने गृहकार्यवश मैं सफरमें रहा। ऐसी दशामें इस कार्यभारका निर्वाह आप ही सब महानुभावोंके हाथमें है। आशा है आप सब प्रकारसे मुझे सुविधा और सहायता प्रदान करेंगे।

२—इससे पहिले कि मैं कुछ आगे कहूं, स्थानके विषयमें दो शब्द कहना अनुचित न होगा। मुजफ्फरनगर इस प्रान्तमें जैनियोंका एक मुख्य स्थान है। हमारा परम पवित्र तीर्थक्षेत्र भी हस्तिनापुरजी यहांसे केवल ३० मील है। इसी स्थानपर प्रतिष्ठोत्सवके अवसरपर सन् १९११ में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका अधिवेशन होचुका है। आज वैसे तो इस स्थानपर स्थानीय मेरे बहुतसे सम्बन्धी तथा मित्रगण उपस्थित हैं किन्तु जैन जातिके सुपरिचित मेरे परम मित्र स्वर्गीय रायबहादुर लाला घमंडीलालजीको न देखकर मैं बड़ी भारी त्रुटिका अनुभव कररहा हूं, जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्यमें असम्भव नहीं तो कष्ट साध्य

[illegible] जैन समाजकी तन मन [illegible]

[illegible] भारतवर्ष [illegible] महो- [illegible] बहुत कालसे नवशिक्षित युवकों और नवीन पद्धतिके अनुसार कार्य करनेवालोंकी कार्य प्रणालीमें कुछ न कुछ मत-भेद चलता रहा। महासभाके गत दिल्ली अधिवेशनपर यह निश्चय ही होगया कि जिनके हाथमें आजकल महासभाकी वागडोर है वह न तो शिक्षित युवकोंके साथ सहयोग करनेको ही तैयार हैं और न महासभाके कार्यमें दूसरोंका हाथबंटाना ही उन्हें इष्ट है यहां तक कि जातिके वयोवृद्ध अनुभवी निःस्वार्थसेवी लाला चंपतराय जी बेरिस्टरको जैनगजट पत्रके सहायक संपादक होनेमें बड़ी २ अड़चनें डालीं गईं और दलबन्दी बनाकर प्रस्ताव रद्द करा दिया गया। अन्तको यह विचार कर कि जातिके समस्त व्यक्तियोंको कार्य करनेके लिये क्षेत्र होना चाहिये, समाजके कुछ उत्साही अनुभवी विचारशील महानुभावोंके उद्योगसे इस परिषद्की स्थापना होगई।

महासभासे भी मेरा पुराना और घनिष्ट संबंध है। मैं उसके जन्मकालसे उसे अपनाता और उससे सहानुभूति रखता आया हूं। मेरी तो आन्तरिक भावना यही है कि ये दोनों संस्थायें जैन धर्मानुकूल जाति और धर्मकी उन्नतिमें अग्रसर हों। मुझे आशा है कि यदि ये दोनों सभाएं एक दुसरेके कार्यमें बाधा न डालकर अपने २ कार्यको योग्य रीतिसे संपादन करतीं रहेंगीं तो फिर एक दिन दोनोंका संगम हो जायगा।

४-किसी संस्थाको स्थापित करना तो कोई कठिन कार्य नहीं है थोड़ेसे उत्साहमें नवीन संस्था स्थापित होजाती है। किन्तु उसको सुचारुरूपसे कार्य पथपर चलाना महत्कार्य है। इतनी बड़ी भारतवर्षीय संस्थाको चलानेके लिये दो चार व्यक्तियोंसे काम नहीं हो सकता किंतु सैकड़ों कार्यकर्ताओं और संगठनकी आवश्यकता है। अब उत्साही नवयुवकोंको कार्यक्षेत्रमें आकर अपने उत्साहका परिचय देना चाहिये। अब आपके पास रुकावटका भी बहाना नहीं है। परिषद्के उद्देश्योंकी पूर्ति, समाज और धर्मका उत्थान कार्यकर्ताओंकी कर्मण्यतापर ही निर्भर है।

५-समाजके सामने इस समय इतने कर्तव्य उपस्थित हैं कि यदि केवल उनकी गणना ही की जाय तो बहुतसा समय लग जाय। न वे सब विषय इस छोटे व्याख्यानमें कहे ही जा सकते हैं और न परिषद् उनको एक साथ अपने हाथमें ले सकती है। अतएव मैं मुख्य २ दोचार बातें अपने विचारानुसार कहूंगा जिनके अभावमें जैन समाजकी महाक्षति हो रही है और जिनपर समाजकी भावी उन्नति निर्भर है।

६-सभ्यो! किसी भी समाजका उत्थान और पतन उस समाजकी भावी सन्तानकी योग्यता अयोग्यतापर ही अवलंबित है। योग्यता शिक्षापर निर्भर है। इस विषयमें जापानका जीताजागता ज्वलन्त दृष्टान्त आपके सन्मुख विद्यमान है। जापानियोंकी कुछ ही समयपूर्व कितनी गिरी हुई दशा थी और अब क्यासे क्या हो रही है। हमारी समाजमें उच्च शिक्षाकी बड़ी आवश्यकता है। प्रत्येक विषयके पूर्ण विद्वान होने

चाहिये। यह तो सम्भव नहीं कि हरएक विषयके जैन विद्यालय खोले जासकें। न तो इतना धन ही समाज व्यय करनेको तैयार है और न वे विद्यालय इस स्टैण्डर्डके ही हो सकते हैं कि जो अन्य राष्ट्रीय एवं सरकारी विद्यालयोंकी प्रतियोगता कर सकें। जैन जाति भारतके समस्त प्रांतोंमें विभक्त है। यदि एक दो कालेज खोल भी दिये जावें तो यह सम्भव नहीं हो सकता कि समस्त प्रान्तोंके विद्यार्थी उस कालेजसे लाभ उठा सकें। समाजमें बहुतसे तो ऐसे निर्धन व्यक्ति हैं कि जो धनाभावके कारण अपने बालकोंको उच्च शिक्षा नहीं दे सकते। और कुछ महाशय समर्थ होते हुये भी शिक्षाका मूल्य न समझते हुये अपनी सन्तानको उच्च शिक्षासे वंचित रखते हैं। इधर शिक्षाका मूल्य इतना बढ़ गया है कि साधारण परिस्थितिके मनुष्य अपनी सन्तानको शिक्षित बनानेमें असमर्थ हैं।

हमारी समाजमें बहुतसे ऐसे योग्य कुशाग्र बुद्धि छात्र विद्यमान हैं जिनको आप भी देख रहे हैं कि पढ़ना चाहते हैं किन्तु धनाभावके कारण अपनी शिक्षाको जारी नहीं रख सकते और अपने जीवनके उद्देश्यकी पूर्तिमें असमर्थ हो हताश होरहे हैं।

इस कमीकी पूर्तिका सरल उपाय यही है कि जो असमर्थ होनहार विद्यार्थी चाहे किसी भी प्रांतका हो, और चाहे वह संस्कृत, अंग्रेजी, शिल्पविज्ञान, कृषि, वैद्यक, गणित, कलाकौशल आदि जिस किसी विषयको देशमें या विदेशमें पढ़ना चाहता हो, उसको कुछ नियमोंके साथ स्कालर्शिप दी जाय। इस कार्यके लिये एक **स्कालर्शिप फण्ड खोला जाय** जिसको धनी महानुभाव अपनी चंचला लक्ष्मीको अचल और सार्थक करनेके लिये धनसे भरपूर करके धर्मकी सच्ची प्रभावना करें और फिर दश वर्ष बाद देखें कि समाजकी दशा क्यासे क्या होती है। निम्नलिखित नियमानुसार स्कालर्शिप दिये जा सकते हैं।

(क) विना किसी अपेक्षाके सहायता रूपमें।

(ख) ऋणरूपमें-शिक्षाके पश्चात् समर्थ होनेपर वापिस लेलिया जावे।

(ग) जिस छात्रको स्कालर्शिप दिया जाय उससे एक ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया जावे, कि वह समर्थ होनेपर न्यूनसे न्यून एक छात्रको उतनी ही स्कालर्शिप अवश्य दे।

७—बालकोंकी शिक्षाके साथ २ आपको बालिकाओंकी शिक्षाकी ओर भी पूर्ण ध्यान देना पड़ेगा। स्त्री पुरुषकी अर्धांगनी है यदि कोई व्यक्ति अपने आधे अंगको तो पुष्ट करता चला जाय ओर आधेकी ओर ध्यान न दे और फिर चाहे कि मैं बलवान् होजाऊं तो यह कदापि सम्भव नहीं है। इसी भांति जबतक स्त्री पुरुष—युगलकी शिक्षाका योग्य प्रबन्ध न होगा, तबतक उनकी संसारयात्रा सुख पूर्वक व्यतीत नहीं होसकती। उनको भी यथासम्भव उच्च कोटिकी धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा दी जानी चाहिये। जिससे कि वे गृह सम्बन्धी समस्त कार्योंकी योग्य रीतिसे व्यवस्था करनेमें समर्थ हो सकें। उन्हें कमसे कम पाकविद्या सीवनकला, बाल चिकित्सा, गृह प्रबन्ध और देश स्थिति जानने आदिके लिये दूसरोंका मुह

ताकना न पड़े। उनमें दास दासियोंपर प्रभुता करनेकी शक्ति भी हो तब ही वे गृह-स्वामिनी कहला सकती हैं। बालक बालिकाओंका योग्य होना मुख्यतया माताओंपर अवलंबित है। उनको धर्ममें श्रद्धान कराना सदाचारी बनाना आदिकी कुंजी माताओंके हाथ हीमें है। आपको मनुष्य गणनाकी रिपोर्ट देखकर ही सन्तुष्ट होना न चाहिये, कि हमारी जातिका स्त्रीशिक्षामें दूसरा नम्बर है। मनुष्यगणनामें वे स्त्रियां भी शिक्षिता गिन ली जाती हैं कि जिनको केवल नाम मात्र ही लिखना आता है। इस उद्देश्यकी पूर्ति वर्तमानमें निम्न उपायोंसे हो सकती है।

(क) स्थान२ पर कन्यापाठशाला स्थापित की जावें।

(ख) स्त्रियोपयोगी पुस्तकें बनाई जावें।

(ग) प्रायः प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक दो स्त्रीशिक्षिता पाई जाती हैं। उनको इस बातके लिये तैयार किया जावे कि वे गृहस्थ स्त्रियोंको सुबह या शाम कमसेकम एक घन्टा शिक्षा दें, जैनियोंके लिये यह बडी सुविधाकी बात है कि उनकी स्त्रियां प्रायः श्री मंदिरजीमें प्रतिदिन दर्शनार्थ जाती हैं और इस कार्यके लिये जैन मंदिर सबसे उचित स्थान हो सकता है।

८-आजकल समाजके सामने जैन जातिके ह्रासकी कठिन समस्या उपस्थित है। सभी इस विषयमें चिन्तित हैं। सन १८९१में समस्त जैन संख्या चौदहलाख सोलहहजार छहसौ अड़तीस थी। सन् १९०१में तेरह लाख चौतीस हजार एकसो अड़तालीस रहि गई। सन् १९११ में बारह लाख अड़वीस हजार होगई। और अब सन् १९२१में ग्यारहलाख अठहत्तर हजार है। इस भांति तीस वर्षमें जैनियोंकी संख्या दोलाख चालीस हजार घट गई जब कि भारतवर्षकी जनसंख्या तीस वर्षमें सत्ताईश करोड़से बढ़कर बत्तीस होगई। यह प्रश्न केवल विकट और चिंता जनक ही नहीं किंतु समाजके जीवन मरणका प्रश्न है। यदि शीघ्र ही इस घटतीके रोकनेका कोई योग्य उपाय न किया जावेगा तो लगभग डेढ़सौ वर्षमें जैन जातिका नामोनिशान इस भारत भूमिपर न रहेगा-कोई भी अरहंत भगवान द्वारा प्रतिपादित इस सर्वोत्कृष्ट धर्मको पालन करनेवाला ढूंढ़नेपर भी न मिलेगा। महानुभावों! हमारी जातिकी संख्या घटनेके बहुतसे कारण हैं जिनमेंसे कुछ कारण बालवि वाह आदिकी विवेचना मैं आगे करूंगा।

मनुष्यगणनाको देखनेसे पता चलता है कि हमारी जातिमें पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां कम हैं। इसका फल यह है कि पुरुष संख्या का पांचवां भाग अविवाहित रहकर अपने दिन काटता है, उनकी संतान और वंश चलानेका कोई मार्ग अव-शेष नहीं है। प्रश्न उपस्थित होता है कि पुरु-षोंकी अपेक्षा स्त्रियां कम क्यों हैं? मैं बहुत विचार करनेपर भी स्त्रियोंकी कमीके कारणोंको पूर्णरूपसे निश्चय नहीं कर सका, किन्तु बहुतसे कारणोंमेंसे एक कारण यह भी है कि कन्याओंका पालन पोषण लड़कोंकी भांति नहीं होता। जन्मसे ही उनको बोझ स्वरूप मान लिया जाता है और उनके जीवनका कुछ मूल्य नहीं समझा जाता। यह भी विचार किया जाता है कि लड़कियां पराया धन है। दूसरे घर चली

जायगी। इनके विवाह आदि संस्कारोंमें बहुतसा धन लगाना पड़ेगा। समाजके दुर्भाग्यसे अभीतक व्यर्थव्यय आदिने हमारा पीछा नहीं छोड़ा है जिसपर मैं आगे स्वतंत्र रूपसे प्रकाश डालूंगा अतएव कन्याओंकी अवहेलना की जाती है। ऐसी उच्च और पवित्र धर्मको धारण करने वाली जातिमें ऐसे कुविचारोंका अंश मात्र भी पाया जाना कितना लज्जास्पद और घृणाजनक विषय है।

यह जाति ह्रासका विषय बहुत ही गम्भीर और विचारणीय है। शीघ्रतासे हम इसका निर्णय नहीं कर सकते। आवश्यक्ता है कि परिषदकी ओरसे एक कमेटी नियत की जावे, जो हर प्रान्तमें जाकर अनुसन्धान करे कि हमारी समाजका ह्रास इतने वेगसे क्यों हो रहा है। और वह किस भांति रोका जा सकता है। कमेटी अपनी रिपोर्ट छहमासके भीतर समाजके विचारार्थ प्रकाशित करे और परिषदके आगामी अधिवेशन पर उस कमेटीकी रिपोर्टको प्रयोगमें लानेका बीड़ा उठाया जावे।

यह प्राकृतिक नियम है कि प्रत्येक वस्तुमें वृद्धि ह्रास हुवा करता है। यदि वृद्धि न होकर केवल ह्रास ही ह्रास होता रहे तो एक दिन उसकी सत्ता अवश्य नष्ट हो जायगी। ठीक यही दशा वर्तमानमें जैन धर्मानुयायियोंकी है। इनका ह्रास बराबर होरहा है और वृद्धिके मार्ग सब बंद हैं। आप जैनियोंके ह्रासके कारणोंको दूर करनेका प्रयत्न तो अवश्य करेंगे ही, परन्तु जब तक उनकी वृद्धिके उपायका अवलंबन न किया जावेगा तबतक आर्षप्रणीत जैनधर्म संसारमें स्थिर नहीं रहसकता हम आजकलके जैनोंका जैन धर्म जन्म सिद्ध अधिकार नहीं है। प्रातः स्मरणीय श्री तीर्थङ्कर भगवानने पशु पक्षियों तकको धर्मोपदेश दिया है। इस धर्मकी फिलासफीने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि संसारमें कुछ सुख शान्ति मिल सकती है तो इसी धर्मसे। पाश्चात्य देशोंमें जैनधर्मका थोड़ासा प्रकाश पड़ा है इसीसे डाक्टर हर्मन जैकोबी, मिस्टर हर्बर्ट वारन सरीखे विद्वानोंने जैनधर्मकी मुक्त कंठसे प्रशंसा की है तथा कई पुस्तकें अंग्रेजीमें जैनधर्मके विषयमें लिखी हैं। डाक्टर थामसूने जैनधर्मके विषयमें बड़े महत्वके विचार प्रगट किये हैं, डाक्टर साहबने स्वामी कुन्द-कुन्दाचार्य विरचित श्री प्रवचनसार ग्रन्थका इङ्गलिश अनुवाद किया है। भारतवर्षका तो कहना ही क्या है इस देशका तो यह राष्ट्रीय धर्म रह चुका है। जिन धर्मोंमें कुछ भी सार नहीं वह लोग तो अपने धर्मकी देशविदेशमें प्रभावना कर रहे हैं और आपके धर्ममें तो अहिंसावाद, कर्म सिद्धान्त और स्याद्वाद आदि सैकड़ों विषय ऐसे हैं कि यदि उनपर प्रकाश डाला जाय तो संसार मुग्ध हो। जाय आपके मूल सिद्धान्त "अहिंसा"का सिक्का आजकल जनताके हृदय पर बहुत कुछ बैठता जारहा है ऐसे समयमें आपको इस अहिंसा धर्मके प्रचारमें विशेष रूपसे कटिबद्ध होनेकी जरूरत है। इसको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये निम्न लिखित उपाय वर्तमानमें उपयोगी सिद्ध होंगे।

(क) एक प्रकाशन विभाग खोला जाय जिसके द्वारा बहुत सरलता और सुगमताके साथ

जैन धर्मका परिचय करनेके लिये भिन्न २ भाषाओंमें भांति २के ट्रैक्ट और पैम्फलेट छपाये जावें और विना मूल्य अथवा अल्प मूल्यपर वितीर्ण किये जावें।

(ख) बंगाल बिहारमें सराक नामकी जाति है जो जनसंख्यामें लगभग एकलाख होगी और मानभूम, सिंहभूम आदि जिलोंमें फैली हुई है। वह जीवहिंसा नहीं करते, पंच उदम्बर फल नहीं खाते, और पार्श्वनाथ भगवानको अपना देवता मानते हैं, किन्तु जैन धर्मके विषयमें कुछ नहीं जानते। पता चलता है कि यह कुछ समय पूर्व जैन थे किन्तु जैनधर्मका संसर्ग न रहनेसे वह अपनेको भूल गये हैं। श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी तथा कलकत्ता निवासी भाई बैजनाथजी सरावगी आदिने उनके सुधारनेका कुछ प्रयत्न प्रारम्भ किया है व उनके केन्द्रस्थानोंमें पाठशालायें स्थापित कराई हैं। इसका कुछ फल भी हुआ है। उनका सविस्तर हाल मैं व्याख्यान बढ़ जानेके भयसे इस समय नहीं कहता।

इधर बरेली जिलामें एक रामनगर स्थान है जो कि पार्श्वनाथ भगवानकी केवलज्ञान भूमि है। और अहिछत्रके नामसे प्रसिद्ध है वहां आजकल कोई जैन नहीं रहता किन्तु रामनगरमें रहनेवाली सब जातियां पार्श्वनाथ भगवानको मानती तथा उनमें श्रद्धा भक्ति रखती हैं उनके बालकोंको जैन धर्मकी शिक्षा देनेके लिये गत वर्ष पाठशाला खोली गई है और साप्ताहिक सभा स्थापित करादी गई है। इसी मासमें मैं भी अहिछत्रके वार्षिक मेलेपर गया था, वे लोग शास्त्रसभा, व्याख्यान सभामें संमिलित होते थे। उनसे वार्तालाप करनेसे मालूम हुआ कि उनके हृदयपर कुछ जैन धर्मका प्रभाव बड़ा है। इसी भांति चांदनगांव महावीरजीमें वहांके निवासियोंकी भी महावीर भगवानमें बड़ी श्रद्धा भक्ति है। उनको भी महावीर भगवानका पवित्र उपदेश बतलानेकी आवश्यक्ता है। इन स्थानोंपर और ऐसे ही अन्य स्थानोंपर जैन धर्मके प्रचारका कार्य परिषदको अपने हाथमें लेकर उसको वेगके साथ चलाना चाहिये।

उपदेशक नियत किये जावें, पाठशालाएं स्थापित की जावें, जो पाठशाला स्थापित हो चुकी हैं उनको दृढ़ किया जावे, परोपकारार्थ औषधालय आदि खोले जावें। उपदेशकीका कार्य यदि हमारे त्यागी, महात्मा करें तो अच्छी सफलता मिल सकती है क्योंकि सब बातोंकी अपेक्षा चारित्रका प्रभाव अधिक पड़ता है।

(ग) ऐसे बहुतसे स्थान हैं जहांपर दोचार घर जैनियोंके थे किंतु जैन मंदिर आदि धर्म साधन न होनेसे और अजैनोंका अधिक संसर्ग रहनेसे अपने जैनत्वको भूलकर अजैन होगये हैं। ऐसे स्थानोंकी एक सूची तैयार की जाय और योग्य उपदेशकों एवं प्रभावशाली पुरुषों द्वारा उन्हें पुनः जैनधर्मपर दृढ़ किया जावे।

(घ) एक ऐसा जैन इतिहास तैयार किया जाय कि जिसमें जैनधर्मका तुलनात्मक स्थान अन्य धर्मोंकी अपेक्षा प्रत्येक समयका ज्ञात हो जावे। यह पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टिसे लिखी जाय जिसको केवल भारतवर्षके ही विद्वान् नहीं किन्तु संसारभरके विद्वान् स्वीकार करें। यदि

आज संसार यह मान ले, कि चन्द्रगुप्त सम्राट् जैन धर्मानुयायी था तो यह अनुमान सहज ही में कर लिया जायगा कि उस समय जैनधर्म राष्ट्रीय धर्म था, और भारतवासियोंके पूर्वज भी कभी इस धर्मके माननेवाले रहे हैं। इसका फल यह होगा कि भारतवासी इस धर्मको भी आदर भावसे देखने लगेंगे और इसके जाननेके इच्छुक होंगे।

(१०) मैं पहिले संकेत कर चुका हूं कि जाति ह्रासके कारण बालविवाह, वृद्धविवाह भी हैं। अब मैं उनकी तरफ आता हूं। इन कुरीतियोंने हमारी समाजको जर्जरित कर रक्खा है, इनके हटानेका बहुत दिनोंसे आन्दोलन होरहा है, परन्तु मनुष्यगणनाकी रिपोर्टसे यह जानकर हृदय विदीर्ण होजाता है कि अभी हमारी समाजमें पांच वर्षसे कम अवस्थाकी विधवा विद्यमान है। तो कैसे कहा जासकता है कि आन्दोलनका परिणाम संतोषजनक निकला है। इसको रोकनेकेलिये केवल प्रस्तावोंसे काम नहीं चलेगा। अमली कार्यवाहीकी आवश्यकता है। कन्याका विवाह १४ वर्षसे पूर्व न हो, और लड़कोंका विवाह अठारह वर्षसे कम और चालीस वर्षसे अधिक अवस्थामें न हो। परिषदको प्रत्येक स्थानपर अपना इस भांतिका संगठन बनाना चाहिये कि जहांपर उपर्युक्त नियमका उल्लंघन होता हो, वहां जिस भांति बने योग्य उपायोंसे उस विवाह सम्बन्धको न होने दें। यदि अन्य उपायोंसे कार्य न चले तो ऐसे विवाहोंमें किसीको सम्मिलित न होने दें। बालविवाहके रुक जानेसे चौदह वर्षसे कम अवस्थाकी विधवा जिनकी संख्या बहुत काफी है, न हो सकेंगी। चालीस वर्षसे ऊपरका विवाह रुक जाना भी विधवाओंकी संख्यामें कमीका कारण होगा। इस प्रकार बालविवाह और वृद्धविवाह रुकनेसे जो कन्यायें वैधव्यसे बचेंगी उनका संबंध युवकोंके साथ होनेसे वह जातिकी वृद्धिमें कारण होंगी।

बाल विवाहसे बहुतसी कन्यायें गर्भधारण शक्ति न होनेके कारण असमय ही प्रसव पीड़ासे मृत्युको प्राप्त होजाती हैं और यदि उनकी संतान होती है तो वह बलहीन और संसारके कार्योंमें साधक न हो बाधक होती है।

विवाहके १, ३, ५ साल बाद द्विरागमन (गौना) की प्रथा भी हटा देनी चाहिये यह भी बाल विवाहमें साधक है इसके दूर करनेसे जिस समय द्विरागमन (गौना) होता है उस समय विवाह होने लगेगा। तथा द्विरागमन और विवाहके बीच विधवा होनेकी जोखम भी जाती रहेगी।

वृद्धविवाहके लिये कन्याविक्रय बहुत अंशोंमें साधक होरहा है। इस घृणास्पद और लज्जाजनक कुरीतिको रोकनेके लिये परिषदको अपनी पूर्ण शक्ति लगा देनी पड़ेगी और ऐसे, दीन अबला कन्याको बेचकर आजीविका करनेवाले अधम पुरुषोंके यहां पंचोंको लड्डू खानेसे काम न चलेगा किंतु ऐसे विवाहोंसे असहयोग करना पड़ेगा।

११—फजूल खर्चीके सम्बन्धमें भी मुझे समाजसे वही शिकायतें हैं जो मैं कुरीतियोंके सम्बन्धमें कर चुका हूं। जन्म, विवाह और

मृत्युके समय पर जो अनुचित व्यय होरहा है उसको रोकनेके लिये समाजसेवी २५-३० वर्षसे चिल्लारहे हैं परन्तु फल बहुत कम निकला है। परिषद्को अपने प्रस्ताव द्वारा निम्नलिखित फजूलखर्ची सर्वथा बंद करदेना चाहिये। और शेष छोटी २ रस्मोंके लिये स्थानीय अथवा जिला सभाओंको अधिकार दिया जावे कि अपने २ रिवाजों पर विचार करते हुवे दस्तूर उलअमल (नियम) बनावें।

(क) १०० आदमियोंसे अधिक बारात न हो।

(ख) बारातमें मिठाईकी पत्तल दो छटांकसे अधिक न हो!

(ग) बूर, बखेर, बागबहारी, आतिशबाजी, रंडियां नचाना कतई बन्द कर दिया जावे।

(घ) जेवर दिखाना बन्द कर दिया जाय।

(च) मरनेकी ज्योनार बन्द की जाय।

(छ) गौना बन्द किया जाय।

इसके सिवाय बहुतसा द्रव्य अनावश्यक और अनुपयुक्त वस्त्र आदि आडम्बरोंमें स्वाहा कर दिया जाता है। आजकल समयकी गति, वस्तुओंकी मंहगाई, शिक्षादि कार्योंकी आवश्यकतायें हमें ऐसे फजूलके धन व्ययसे सहसा रोकती हैं। हम लोग व्यापारोन्नतिसे वणिक कहलाते हैं परन्तु इन फजूल खर्चियोंके देखनेसे कहना पड़ता है कि वास्तवमें हम वणिक् पद्धतिसे बिलकुल दूर हैं। ऐसे पानीके संग्रहसे क्या उपयोग सिद्ध होगा, जो अनावश्यक द्वारसे बह रहा हो। व्यापारकी उथल पथलमें जब धन वृद्धिका मार्ग रुक जाता है ऐसे समयमें मितव्ययी पुरुष ही अपनी रक्षा कर सकता है। फिजूल खर्ची और धनोपार्जनके मार्गको देखकर मुझे यह भी कहते हुये संकोच नहीं होता कि ऐसे व्यर्थ व्ययोंके बढ़ जानेसे आज द्रव्योपार्जनका मार्ग अनीतिपरायण होगया है। समयकी आवश्यकता और देशकी दशा हमें पाठ देती है कि अब हम बहुत दिनोंसे उपयोगमें आई हुई चटक मटकको छोड़कर सादी जिन्दगी बनावें। छलकपट रहित आडंबर शून्य सादे जीवनका महत्व बहुत बड़ा है। अब हमें फैशनके रोगसे जितना जल्दी होसके मुक्त होजाना चाहिये, एक दिनमें पांच चार वार बदले जानेवाली उन पोशाकोंको हमें तुर्त विदा कर देना चाहिये जो कि धनके दुरुपयोगके साथ २ भारतीयता नष्टकर रही हैं। भारतीय जीवन शुद्ध और सादा जीवन है उसमें अल्पव्ययके साथ भव्यता भरी हुई है वैसा पवित्र जीवन हरेकको बनाना आवश्यक है।

१२-साधर्मी सज्जनों! अब मैं आपका ध्यान एक दूसरे विषयकी ओर आकर्षित करता हूं। यह तो निर्विवाद है कि पूजा प्रतिष्ठायें धर्म-लाभकी प्राप्ति और प्रभावनाके अर्थ की जाती हैं। जैन समाजका वीस पच्चीस लाख रुपया प्रतिवर्ष इस मद (विभाग) में व्यय होता है। परन्तु क्या कोई विचारशील व्यक्ति इस बातको कहनेका साहस कर सकता है कि जिस ढंगसे आजकल पूजा प्रतिष्ठाएं होती हैं उनसे जितना चाहिये उतना धर्मलाभ और धर्मप्रभावना होती है? आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं यह कह दूं कि पूजा क्या एक अच्छी प्रदर्शिनी होती है। बाकायदे बाजार लग जाते हैं। स्त्री पुरुषोंके

मनोविनोदार्थ सर्व सामग्री एकत्रित होती है। मनुष्य सुंदरसे सुंदर वस्त्राभूषण धारणकर सैरको निकलते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्त्यनुसार फैशन बनानेमें न्यूनता नहीं करता।

भाइयो ! मैं पूजा प्रतिष्ठाओंका विरोधी नहीं हूं किंतु इस रीतिका विरोधी हूं जिस रीतिसे वर्तमानमें पूजा प्रतिष्ठायें होती हैं। पूजा प्रतिष्ठाओंमें संयत भोजन सामग्रीके अतिरिक्त अन्य दूकानोंकी क्या आवश्यकता है ? इस भांतिकी सजधजसे क्या लाभ है ? वस्त्राभूषण दिखानेके लिये अन्य बहुत बड़ा क्षेत्र विद्यमान है। यहांपर तो केवल साधारण रूपसे आना चाहिये और बाजारोंमें न घूमकर पूजा, शास्त्र, शंका समाधानमें ध्यान लगाना चाहिये, स्थान २ पर धार्मिक व्याख्यान होने चाहिये। हमको मनसा, वाचा, कर्मणा भगवानकी श्रद्धा, भक्तिमें लीन रहना चाहिये और अन्य धर्मावलम्बियोंके हृदयपर जैन धर्मकी सचाईका प्रभाव डालनेका प्रयत्न करना चाहिए ? तभी जैन धर्मकी प्रभावना और धर्म लाभ होसकता है। जिन महानुभावोंको कभी गुरुकुल कांगड़ीके कमेटीके जल्सेपर जानेका अवसर मिला होगा उनको भली भांति ज्ञात होगा कि धर्म प्रभावना किस भांति होती है।

कुछ ही समय पूर्व इतनी अधिक पूजा प्रतिष्ठायें नहीं होती थीं। देखते २ दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं।

यदि इतनी पूजा प्रतिष्ठा न होकर कम हों तो उसमें धर्म लाभ भी अधिक हो सक्ता है, जनता भी अधिक संख्यामें उपस्थित हो सक्ती है, और आनन्द भी विशेष रह सक्ता है।

जिस बातका मुझे सबसे अधिक रोना है वह धनका व्यय है। आपके सामने बहुतसे उपयोगी विषय—शिक्षा, समाज सुधार, धर्म-प्रचार आदि विद्यमान हैं। रुपया तो उतना ही है। यदि और विभागोंसे बचेगा तो आप इन उपयोगी कार्योंमें खर्च कर सकेंगे। आशा है कि आप पूजा प्रतिष्ठाओंकी बढ़तीको रोकने, उनमें उचित सुधार करने और उनमें सादगी पैदा करनेके लिए प्रयत्न करेंगे।

१६-समाजके सामने अपना धन, समय और शक्तिको व्यय करनेके लिये एक और मार्ग खुला हुआ है और वह तीर्थोंकी लड़ाई है। तीर्थक्षेत्र जो पूजा वन्दनाके क्षेत्र थे, खेद है अब समयके प्रभावसे लड़ाईके अखाड़े बने हुवे हैं। दिगम्बर समाजको तो अपने स्वत्वकी रक्षाके लिये इसमें पार्ट लेना पड़ रहा है। वह यह नहीं चाहते कि श्वेतांबरियोंको तीर्थोंसे निकाल दें। हमारे विचारके अनुसार तो श्वेतांबरी क्या और भी कोई आकर तीर्थ वंदना करें तो हम उनका स्वागत करते हैं। किंतु कुछ श्वेतांबरी सज्जनोंका ऐसा विचार होगया है कि हम दिगम्बरियोंको तीर्थोंसे निकालकर छोड़ेंगे। तीर्थ सनातन हैं, किसीकी मिलकियत नहीं होसक्ते। श्वेतांबरी अपनी मनोकामनामें सफल नहीं हो सकेंगे। व्यर्थकी लड़ाई है।

दोनों आम्नायोंके आपसके विरोधसे जैन समाजका गौरव घट रहा है। इधर शिया सुन्नी एक होरहे हैं उधर सनातन धर्मी और

आर्या समाजी हिंदू संगठन बना रहे हैं और शांतिके उपासक हम लड़ रहे हैं । इस सम्बंधमें मुझे परिषदका यह कर्तव्य मालूम होता है कि इस बातको छोड़कर अभीतक सुलह क्यों नहीं हुई, परिषद्को एकवार पुनः सुलहके लिये प्रयत्न करना चाहिये । और ४ व्यक्तियोंका एक ड्यपुटेशन बनाकर श्वेताम्बर समाजके कुछ शिक्षित व्यक्तियोंके पास विचार परिवर्तनार्थ जाना चाहिये । श्वेताम्बर समाजमें भी सुलहके इच्छुक व्यक्ति अवश्य होंगे । उनको तैयार किया जावे कि वे अपनी समाजमें इस विषयका आन्दोलन मचावें, और फिर एक सुलह कान्फ्रेंस हो ।

१४–सन्नारियों एवं सद्गृहस्थों ! अब मैं आपके हितकी एक बात और कहूंगा । हम लोग कुछ प्रमादवश और कुछ भिन्न२ आन्दोलनोंमें पड़कर अपने समीचीन धर्मकी श्रद्धा और मर्यादाको ढीली कर रहे हैं । हमको अपने धर्मपर दृढ़ रहना चाहिये । मुसलमानोंकी ओर ध्यान दीजिये, वे अपने धर्माचरणमें कितने पक्के हैं चाहे जो कुछ भी क्यों न हो समयपर पांचवार नमाज पढ़ लेते हैं । उनकी नमाजके समय कौंसिलें तक स्थगित होजाती हैं ।

हमको सबसे पहिले अपने धर्ममें अटल श्रद्धा रखनी चाहिये इसीको सम्यग्दर्शन कहते हैं। इसकी शास्त्रोंमें बड़ी महिमा है । हमारा कर्तव्य है कि हम प्रति दिन विधि पूर्वक देवदर्शन श्रावकके षट् कर्म करें । सप्त व्यसन, पांच पाप और अभक्ष्योंका त्याग करें । खानपान शुद्ध रखें यह समझना कि खानपानमें कोई धर्म नहीं है बड़ी भारी भूल है, क्योंकि बाह्याचरणका अंतरंगसे घनिष्ट सम्बन्ध है ।

बालकोंका संस्कार ठीक करनेके लिये उन्हें प्रारम्भमें धार्मिक शिक्षा अवश्य देनी चाहिये, अर्थ न समझनेपर भी श्री तत्वार्थ सूत्रजी, रत्न करण्ड श्रावकाचार आदि धार्मिक पुस्तकें रटा देनी चाहिये । फिर लौकिक शिक्षाके साथ भी चाहे वह कहीं पढ़े घण्टा आध घण्टा धार्मिक शिक्षाका प्रबंध अवश्य हो तभी वे धर्ममें श्रद्धालु और संयमी बनकर अपनी आत्माका कल्याण कर सकते हैं । यदि आत्म–कल्याण ही नहीं तो सब बातें निःस्सार हैं ।

१५–अपने स्थानपर बैठनेसे पहिले मेरा कर्तव्य है कि मैं स्वागतकारिणी समितिके कार्याध्यक्षोंका आभार मानूं और उन्हें धन्यवाद दूं । किंतु विशेष कुछ कारणोंसे मैं इस कर्तव्यको अंतिम दिन अपनी क्लोजिङ्ग स्पीच (Closing Speech) में अदा करूंगा ।

महानुभावो ! आज आपका बहुतसा अमूल्य समय मैंने लिया है इसके लिये मैं आपसे क्षमा प्रार्थी हूं मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा यदि आप मेरे विचारोंसे काम उठावेंगे ।

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

जुगमन्दरदास ।

सोलहकारण धर्म ।

अभी ही नवीन छपकर दूसरीवार तय्यार हुआ है । इसवार इसमें सोलहकारणव्रत कथा व सोलह भावनाओंके सोलह सवैये भी बढ़ा दिये गये हैं। व कुछ बढ़ाया घटाया भी गया है । की० ॥)

मैनेजर–दि० जैनपुस्तकालय–सूरत ।

भारत० दि० जैन परिषद्के प्रथमाधिवेशन मुजफ्फरनगरमें स्वीकृत प्रस्ताव ।

प्रस्ताव नं० १-यह परिषद निम्नलिखित महाशयोंके असमय वियोगपर शोक प्रगट करती है और उनके कुटुंबियों प्रति समवेदना दर्शाती है। १ पं० पन्नालालजी न्याय दिवाकर, २ ला० जम्बूप्रसादजी रईस सहारनपुर, ३ लाला दीपचंदजी सहारनपुर, ४ रा० सेठ मेवारामजी खुर्जा, ५ रा० ला० अजितप्रसादजी देहरादून, ६ ब्र० ज्ञानानंदजी, ७ ब्र० गोकुलप्रसादजी ८ ब्र० जिनेश्वरदासजी ।

प्रस्तावक-सभापति ।

प्र० नं २-यह परिषद प्रस्ताव करती है कि एक व्याख्यान विभाग स्थापित किया जाय, जो जैन स्कूल व जैन बोर्डिंगहाउसोंमें जैन धर्मपर व्याख्यान करानेका प्रबंध करे। और निम्नलिखित महाशयोंसे विशेषतया प्रार्थना की जाय कि वे १ सालमें कमसे कम इन संस्थाओंमें दो वार व्याख्यान देवें ।

१ ला० जुगमंदिरदासजी बैरिष्टर व जज इंदौर
२ ,, अजितप्रसादजी वकील एम०ए० लखनऊ
३ श्री जयकुमार देवीदासजी वकील अकोला
४ बा० चंपतरायजी बैरिष्टर हरदोई
५ जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजी
६ पं० चन्द्रकुमारजी न्याय काव्यतीर्थ नजीबाबाद
७ बबू ऋषभदासजी वकील मेरठ
८ सी० ऐस० मल्लिनाथ मद्रास
९ ए० चक्रवर्ती एम० ए० मद्रास

बाबू बलवीरचन्द्रजी जैन वकील मुजफ्फरनगर इसके मंत्री नियुक्त किए गये। मंत्रीजीका यह भी कार्य होगा कि उन संस्थाओंमें जैनधर्मकी शिक्षा और उसकी परीक्षाकी भी प्रेरणा करे।

प्रस्तावक- ब्र० शीतलप्रसादजी
समर्थक-पं० महबूबसिंहजी देहली
,, ला० शिब्बामलजी अंबाला

प्र० नं० ३-यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि सर्व साधारणको जैन धर्मका अच्छा परिचय करानेके लिए एक पुस्तक ऐसी तय्यार की जाय कि जिसमें जैनधर्मकी प्राचीनता और सिद्धांत संक्षेपमें आ जावें। यह पुस्तक हिन्दी, उर्दू, बंगाली, उड़िया, मराठी, कानडी, तामील, तेलगू आदि भाषाओंमें प्रकाशित की जावे, जैनधर्मभूषण ब्र०शीतलप्रसादजी इसको हिंदीमें तैयार करें व नीचे लिखे विद्वानोंसे इसका संशोधन कराया जाय।

१ न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी वर्णी
२ ,, पं० माणिकचंदजी मोरेना
३ बाबू जुगमंदिरलालजी वेरिष्टर इंदौर
४ ,, चंपतरायजी बैरिष्टर हरदोई
५ ,, अजितप्रसादजी एम०ए० वकील लखनऊ
६ पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार सरसावा

प्रस्तावक-पं० चंद्रकुमारजी न्याय काव्य तीर्थ
समर्थक-पं० बाबूरामजी आगरा

प्रस्ताव नं० ४-मारवाड़ी जैन अग्रवाल और देशी जैन अग्रवाल दोनों एक ही जाति हैं, केवल क्षेत्र भेद होनेसे कोई भेद नहीं होसक्ता, अतः यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि दोनोंमें

परस्पर रिश्ते होनेके लिए उत्तेजना दी जाय।

प्रस्तावक–ज्योतिप्रसादजी देवबंद
समर्थक–मित्रसेनजी रईस खतौली
,, विश्वंभरदासजी गार्गीय झांसी
,, सेठ फूलचंदजी खुर्जा

प्र० नं० ५–जैन समाजकी संख्याके वेगके साथ ह्रासको यह परिषद् चिंता व भयकी दृष्टिसे देखती है और प्रस्ताव करती है कि निम्न लिखित सज्जनोंकी कमेटी बनाई जाय, जो जैन समाजकी संख्याके ह्रासका अनुसंधान करे, और छह मासके अंदर रिपोर्ट प्रकाशित करे, जिससे ह्रासके कारण व उसके रोकनेके उपाय बतलावें। मंत्रीको अधिकार दिया जावे कि इसमें और नाम शामिल करलें।

श्रीयुक्त लाला रतनलालजी बिजनौर मंत्री
,, ज्योतिप्रसादजी देवबंद
,, बा० चेतनदासजी मथुरा
,, ब्र० शीतलप्रसादजी
,, साहु जुगमंदरदासजी नजीबाबाद
,, पं० बाबूरामजी आगरा
,, ब्र० गणेशप्रसादजी वर्णी

प्र०–ला० रतनलालजी वकील बिजनोर
समर्थक–सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया
,, ब्र० गणेशप्रसादजी वर्णी

प्रस्ताव नं० ६–यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैन मंदिरोंमें धोती, दुपट्टे, कपड़े, वेष्टन आदि स्वदेशी शुद्ध सूती वस्त्रोंके ही प्रयोगमें लाये जावें। और चंदोवे आदि रेशम व अशुद्ध सूती वस्त्रके न चढ़ाये जावें। और जनतासे प्रार्थना करती है कि वह ऐसे वस्त्रोंका व्यवहार न करें।

प्रस्तावक–लाला नेमीशरणजी जैन वकील बिजनौर
समर्थक–ब्र० भागीरथजी वर्णी
,, ब्र० गणेशप्रसादजी वर्णी
,, सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया-सूरत

प्रस्ताव नं० ७–जैन इतिहासकी अत्यन्त आवश्यकता समझकर यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैन इतिहास तैयार करनेके हेतु इतिहास विभाग स्थापित हो, जिसके मंत्री व बा० हीरालालजी एम० ए० हों। वे स्वयं तथा बा० मुनिसुव्रतदासजी मेरठ व बा० कामताप्रसादजी तथा अन्य विद्वानोंसे सहायता लेकर तैयार करें।

प्रस्तावक–बा० कामताप्रसादजी अलीगंज
समर्थक–बाबू नेमीशरणजी वकील बिजनौर
अनुमोदक–ब्र० शीतलप्रसादजी

प्रस्ताव नं० ८–जैन धर्मके प्रचारका जो काम प्राचीन श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता तथा अहिक्षेत्र तीर्थ प्रबन्धकारिणी सभा कर रही है उसकी यह परिषद् सराहना करती हुई प्रस्ताव करती है कि यह परिषद् धर्मप्रचारके हेतु एक उपदेशक विभाग खोले जिसके द्वारा अवैतनिक और वैतनिक विद्वानोंसे उपदेश कराया जाय। तथा इसके मंत्री मास्टर चेतनदासजी मथुरा नियत किये जांय।

प्रस्तावक–सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया
समर्थक–बाबू जुगलकिशोरजी मुख्तार
अनुमोदक–बा० रतनलालजी बिजनौर
,, बा० मिट्ठनलालजी शामली
,, ब्र० शीतलप्रसादजी

प्रस्ताव नं० ९–दिगम्बर श्वेताम्बरियोंमें ती-

थोंके संबंधमें जो अदालती झगड़े चल रहे हैं उससे धन और पुरुषार्थकी महान हानि होरही है और सर्व जैन समाजका गौरव घट रहा है अतः यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि नीचे लिखे महाशयोंका एक डेपुटेशन नियुक्त किया जाय, जो कि दिगम्बर श्वेतांबर दोनों समाजोंके मुखिया और शिक्षित व्यक्तियोंसे मिलकर झगड़े मिटाने और एकता उत्पन्न करनेका प्रबंध करे।

बा० नेमीशरणजी
मि० मुनिसुव्रतदासजी
बा० रतनलालजी वकील
बा० बलवीरचन्दजी ,,
रा० ब० सखीचंदजी पुरी
रा० ब० नांदमलजी अजमेर

प्रस्तावक—सेठ मोतीलाल
समर्थक—बा० लक्ष्मीचंदजी
,, सेठ तिलोकचंदजी दिहली
,, मास्टर चेतनदासजी मथुरा
,, नेमिशरणजी वकील बिजनौर
,, बलवीरचंद जैन वकील मुजफ्फरनगर

प्रस्ताव नं० १०—जैन जातिमें बाल विधवाओंकी संख्याकी अधिक बढ़ती देखकर और कुमारोंके विवाह न होते देखकर यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि बालविवाह वृद्ध विवाह और कन्याविक्रय बंद किया जाय तथा विवाहके समय कन्याकी आयु १२ वर्षसे कम और लड़केकी आयु १६ वर्षसे कम न हो और ४० वर्षके ऊपर कोई पुरुष विवाह न करें। इस प्रस्तावके विरुद्ध जो विवाह हो उनमें कोई सज्जन सम्मिलित न हों।

प्रस्तावक—पं० मक्खनलालजी देहली
समर्थक—बा० लखपतराय गनौर
,, पं० बाबूरामजी अहारन
,, ब्र० सीतलप्रसादजी
,, ला० शिव्रामलजी अम्बाला

प्रस्ताव नं० ११—यह परिषद प्रस्ताव करती है कि व्यर्थ व्ययको रोकनेके संबंधमें नीचे लिखी बातें एकदम बन्द की जावें और छोटी २ रस्मोंके लिये स्थानीय पंचायतोंको प्रेरणा की जावे कि वे आप अपने रिवाजोंको ध्यानमें रखते हुए एक दस्तुरुल अमल (कायदा) बना लेवें।

१—बाहरकी बरात १०० आदमियोंसे अधिक न हो।
२—पत्तलकी मीठाई २ छटांकसे अधिक न हो।
३—जेवर और दाद दिखलाना बंद कियाजाय।
४—बूर बखेर अतिशबाजी, बाग बहारी, वेश्यानृत्य, नक्कालोंका नाच, स्वांग आदि बंद किया जाय।
५—मृत्यु समयकी ज्योंनार व गिदौड़ा बन्द किया जाय।
६—द्विरागमन बंद किया जाय।

प्रस्तावक—विश्वम्भरदास गार्गीय झांसी
समर्थक—ला० अतरसैन देशभक्त सम्पादक मेरठ
अनुमोदक—मूलचंद किशनदासजी कापड़िया
,, —उपदेशक देवीसहायजी

प्रस्ताव नं० १२—परिषद्के आगामी सालके खर्चेके लिये निम्नलिखित बजट पास किया जावे।

वीर	२४००)
दि० श्वे० एकता विभाग	१०००)
प्रबंध खाता	५००)
प्रचार खाता	१०००)
इतिहास सम्बन्धी	५००)
ट्रैक्ट विभाग	५००)
जैन ह्रासके उपायोंका अनुसंधान	५००)
बोर्डिंगोंमें व्याख्यान विभाग	५००)
पुस्तक तैयार	५००)
	७४००)
	७ १४००)
	६०००)

प्रस्तावक–ला० रतनलालजी

समर्थक–ब्र० शीतलप्रसादजी

,, –मूलचन्द किसनदासजी कापड़ियासूरत

प्रस्ताव नं० १३–वर्तमानमें जैन समाज बिम्ब व वेदी प्रतिष्ठाओंको अधिकतासे करती हुई उनको लौकिक मेलेका रूप देकर सच्ची धर्म प्रभावनामें हानिकारक होरही है, इसलिये यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि अत्यन्त आवश्यकता होने पर ही प्रतिष्ठाएं बहुत सादगी और कम खर्चमें की जांय तथा उनमें अत्यन्त आवश्यक भोजनादि सामग्रीकी दूकानोंके सिवाय और उसमें न रक्खी जांय तथा धर्म व्याख्यानोंका व महान पूजाका अधिक प्रबन्ध किया जावे और प्रतिष्ठाओंमें दावत करना व गिदोडा लड्डू बांटना बंद किया जाय तथा दाना घास लकड़ीका प्रबंध दाम लेकर किया जाय और ऐसे अवसरोंपर मिलनी आदिकी रस्म बन्द की जाय।

प्रस्तावक–ब्र० सीतलप्रसादजी

समर्थक–पं० चंद्रकुमारजी न्यायतीर्थ

,, पं० बाबूरामजी।

प्रस्ताव नं० १४–उच्च धार्मिक और लौकिक शिक्षाकी जैन समाजमें अभीतक बहुत कमी है इसे दूर करनेके लिये यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैसे सेठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई व लाला प्यारेलाल वकील देहली छात्रवृत्ति फंड स्थापित करके सहायता देते हैं उसी तरह अन्य धनवानोंको प्रेरणा की जाय कि वे अपनी चंचला लक्ष्मीका उपयोग छात्रोंको सहायता रूपसे या कर्ज रूपसे देकर शिक्षा प्रचार करें।

प्रस्तावक–ब्र० शीतलप्रसादजी।

समर्थक–मास्टर चेतनदासजी मथुरा।

प्रस्ताव नं० १५–भारत दि० जैन परिषद्की प्रबंधकारिणी कमेटीके निम्नलिखित सदस्य चुने जाते हैं—

१ चम्पतराय बेरिस्टर सभापति
२ साहू जुगमन्दरदासजी उपसभापति
३ बा० रतनलालजी बिजनौर मंत्री
४ ला० नेमीशरणजी जैन वकील बिजनौर
५ साहू जुगमंदरदासजी ,,
६ बा० बलवीरसिंह वकील मुजफरनगर मंत्री व्याख्यान विभाग
७ हीरालालजी एम०ए० इतिहास विभाग मंत्री
८ ब्र० शीतलप्रसादजी
९ मास्टर बिहारीलालजी अमरोहा
१० राजेन्द्रकुमारजी बिजनौर
११ अजितप्रसादजी एम० ए० लखनऊ
१२ बा० ऋषभदास वकील मेरठ

१३ ,, रूपचन्दजी जैन कानपुर
१४ ,, जुगलकिशोरजी सरसावा
१५ ,, जोतिप्रसादजी देवबंद
१६ ,, चेतनदासजी हेडमास्टर मथुरा
१७ ,, छोटेलालजी कलकत्ता
१८ ,, निर्मलकुमारजी आरा
१९ ,, बैजनाथजी श्रावगी
२० ,, गोकुलचन्दजी दमोह
२१ ,, हरनारायणजी भागलपुर
२२ ,, चवरे वकील अकोला
२३ ब्र० दीपचन्दजी वर्णी
२४ बा० कंछेदीलालजी वकील जबलपुर
२५ सेठ चिरंजीलालजी वर्धा
२६ रा० ब० नांदमलजी अजमेर
२७ बा० मुरारीलाल अम्बाला
२८ रा० ब० लक्ष्मीचन्दजी रईस पानीपत
२९ रा० ब० प्यारेलाल वकील देहली
३० लाला जग्गीमलजी देहली
३१ सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत
३२ ,, ताराचंद नवलचंद मुंबाई
३३ ,, रतनचंद चुनीलाल जरीवाला
३४ सेठ फूलचंद हीराचंद सोलापुर
३५ सी० ऐस० मल्लिनाथ मदरास
३६ सेठ वर्द्धमानैय्याजी म्हेसूर
३७ पं० माणिकचंदजी मोरेना
३८ चंद्रकुमारजी न्याय काव्य तीर्थ
३९ सेठ लालचंदजी सेठी झालरापाटन
४० पं० बाबूरामजी अहारन
४१ बा० मित्रसेनजी खतौली
४२ नेमीचंदजी मुरादाबाद

प्रस्तावक—बा० रतनलालजी बिजनौर
अनुमोदक—बा० बलवीरसिंह मुजफ्फरनगर

प्रस्ताव नं० १६—परिषदकी नियमावली बनानेके लिये नीचे लिखे महाशयोंकी एक कमेटी नियुक्त की जाय, जो नियमावली बनाकर मंत्रीको भेज दे। मंत्री उसको प्रकाशित करके सभासदोंके पास संमतिके लिये भेजकर बहुमतसे पास करले। जहांतक हो यह कार्रवाई शीघ्र पास होनी चाहिये।

बा० चंपतरायजी बैरिष्टर हरदोई
,, अजितप्रसादजी लखनऊ
,, जुगमंदरलाल जज इंदौर
नेमीशरणजी वकील बिजनौर
रतनलालजी ,, ,,
साहु जुगमंदिरदास नजीबाबाद
ब्रह्मचारीजी सीतलप्रसादजी
जुगलकिशोरजी सरसावा
मित्रसेनजी खतौली
बलवीरसिंहजी मुजफ्फरनगर
चेतनदासजी मथुरा
इसका कोरम चारका होगा।

प्रस्तावक—सभापति

❋ विश्वास घातका फल। ❋

एक स्यार जंगलसे आया।
भूखा प्यासा अति घबराया॥
तहँा मृग इक उसे दिखाया।
देखत ही यों मनमें भाया॥१॥
वशमें करूं मृगा यह आज।
जिससे सुधरे मेरा काज॥

यों विचार कर कहा मृगसे।
था मैं व्याकुल बहुत दिनोंसे ॥१॥
मेरा मित्र नहीं है कोई।
इससे करें मित्रता कोई ॥
असत मित्रता मैं नहिं करता।
इससे भला अकेला रहता ॥२॥
जितने जगमें मित्र कहाते।
वे सब झूठी प्रीत लगाते ॥
सच्चा प्रेम नहीं दर्शाते।
स्वारथके बस प्रीत उपाते ॥४॥
तब यों बोला चतुर लिंड़ैया।
शंका करो नहीं तुम भैया ॥
मैं तुमसे अति प्रीत उपाऊँ।
कभी न तुमसे नेह हटाऊँ ॥५॥
किरिया रामचन्द्रकी मुझको।
जो मैं धोका देऊँ तुझको ॥
प्राणोंसे बढकर अपनाऊँ।
तुझको सच्चा मित्र बनाऊं ॥६॥
तब मृग हृदय बहुत हर्षाया।
स्यारके ऊपर प्रेम उपाया ॥
दोनों रहन लगे मिल सोई।
प्रेम भेद जाने नहिं कोई ॥७॥
लिड़ई कपट युत प्रेम बढावे।
मृग नहिं ये बातें मन लावे ॥
इक दिन किया लिड़ईने कैसा।
सो सब तुम्हें बतावें वैसा ॥८॥
जहां बहिलिया जाल बिछाया।
वहां लिड़इ मृग लेकर धाया ॥
फंसा दिया मृगको फंदेमें।
आपन जाय छिपा खंदेमें ॥९॥
इतनेमें इक वायस आया।
मृगको यों उपदेश सुनाया ॥
अब दम साधो मित्र हमारे।
जिससे बचजा प्राण तुम्हारे ॥१०॥
वायस बात सुनत मृगस्याना।
दम, साध रह गया चिमाना ॥
दिलमें सोचे यही लिंड़ैया।
कब आवेगा यार बहिलिया ॥११॥
कांधे धरे कुठार बहिलिया।
आया जाल निकट तल बलिया ॥
मृगको फंसा देखकर उसने।
दिलमें यही विचारा उसने ॥१२
इस मृगने तज दीने प्राण।
फंदा बाहर करूं निदान ॥
फंदा बाहर मृगको डाला।
रोटी बैठा कौआ काला ॥१३॥
तबहि बहिलिया कोप उपाया।
काग उड़ाने तुरतहि धाया ॥
यहां मृग उठ दौड़ लगाई।
देख बहिलिया गुस्सा आई ॥१४॥
फैंक कुल्हाड़ी ऐसी मारी।
कटी लिड़ईकी मुंडि विचारी ॥
यह विस्वासघात फलवंका।
इसमें करो न कोई शंका ॥१५॥
इससे सुनो सकल नरनारी।
तजो कपटकी खोटी यारी ॥
कहत 'प्रेम' सुन चित्त लगाई।
तज विस्वासघाति दुखदाई ॥१६॥

प्रेमचंद जैन पंचरत्न,
जैन विद्यालय–भिन्ड।

રા૦ જીવણચંદ સાકરચંદ ઝવેરી સુરત, રા૦ ચુનીલાલ ગુલાબચંદ દાળીયા સુરત, રા૦ ભાઇચંદ છોટુભાઇ સુરત, રા૦ રતનચંદ ખીમચંદ કાપડીઆ સુરત, રા૦ મુલચંદ કીસનદાસ કાપડીઆ સુરત, રા૦ ઝવેરી મુલચંદ આશારામ વૈરાટી અમદાવાદ, રા૦ વર્ધમાન સરૂપચંદ અમદાવાદ, રા૦ મણીલાલ મોહનલાલ પાદરાકર, રા૦ મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઇ, વગેરે ૨૦ મહાશયો.

દરખાસ્ત—ચુનીલાલ શ્રાફ ટેકો—મોહનભાઇ ઝવેરી અમદાવાદ.

ઠરાવ ૩ જો—જે જે સ્થાનના આપણા જ્ઞાન ભંડારો સર્વેના ઉપયોગના અર્થે ખુલ્લા ન થયા હોય તે ભંડારોના વ્યવસ્થાપકોને મળી તેમને ખુલ્લા મુકાવવા; જે જે ભંડારોના પુસ્તકોની યાદીઓ પ્રસિદ્ધ થઇ ન હોય તેઓની યાદીઓ પ્રગટ કરાવવી; પ્રસિદ્ધ ન થયા હોય અને પ્રસિદ્ધ કરવા જેવાં પુસ્તકો યોગ્ય મુનિરાજો તથા જૈન વિદ્વાનોની દેખરેખ નીચે પ્રગટ કરાવવા યોગ્ય પ્રયત્ન કરવાને માટે તે તે ભંડારોના વ્યવસ્થાપકોને આ પરિષદ ભલામણ કરે છે.

દરખાસ્ત—પં૦ હીરાલાલ હંસરાજ જામનગર, ટેકો—વર્ધમાન સ્વરૂપચંદ વકીલ અને પં૦ ભગવાનદાસ હરખચંદ વળા.

ઠરાવ ૪થો—જૈન ધર્મના દરેક દરેક પુસ્તક છાપેલાં અને લખેલાં મેળવીને, એકઠાં કરીને દરેકની એકેક નકલ રાખી શકે તેવો એક સકળ જૈન સંઘનો મધ્યસ્થ જ્ઞાનભંડાર કરવાની આવશ્યકતા આ પરિષદ સ્વીકારે છે. તેમજ એક જૈન કોલેજ સ્થાપવાની જરૂર આ પરિષદ જણાવે છે.

દરખાસ્ત—નગરશેઠ બાપુભાઇ ગુલાબભાઇ ટેકો—મણીલાલ મોહનલાલ પાદરાકર અને મુલચંદ કસનદાસ કાપડીયા સુરત.

ઠરાવ ૫ મો.—જૈન સસ્તું સાહિત્ય વધુ પ્રચાર પામે તેવો પ્રયત્ન કરવાને આ પરિષદ જરૂર જણાવે છે. અને તે કરવાને માટે મંડળો સ્થપાય એવી અગત્ય આ પરિષદ સ્વીકારે છે.

દરખાસ્ત—મુલચંદ આશારામ વૈરાટી, ટેકો—વસનજી દયાળજી ગણાત્રા તથા વિનયવિજયજી મહારાજ.

ઠરાવ ૬ ઠો. કેમ્બ્રીજ હીસ્ટરી ઓફ Ancient India ના પ્રથમ ભાગમાં તથા શ્રીમાન્ કનૈયાલાલ મુનશી તેમજ અન્ય અજૈન વિદ્વાનો તરફથી જે જે જૈન સંબંધે ભુલ ભરેલાં અને જૈન કોમની લાગણી દુઃખાય તેવાં લખાણો થાય છે તેને આ પરિષદ નાપસંદ કરે છે; અને તેવા લખાણોનું કારણ તે લેખકોની જૈન ધર્મ સંબંધી અભ્યાસની ઓછપ છે તેમ આ પરિષદ માને છે. અને તેથી તેવા વિદ્વાનો જૈન ધર્મ સંબંધી લખાણો લખતા પહેલાં જૈન ધર્મનો વિશેષ અભ્યાસ કરીને લખે એ ઉચિત છે એમ આ પરિષદ દ્રઢપણે માને છે.

દરખાસ્ત—મણીલાલ મોહનલાલ પાદરાકર, ટેકો—પં૦ લાલચંદ ભગવાનદાસ વડોદરા.

પરિષદમાં કુલ્લે ૪૫ નિબંધો આવ્યા હતા જેમાંથી ૧૦ પરિષદમાં વંચાયા હતા. એ બધા નિબંધોમાં હિન્દી ભાષાના બે નિબંધો હતા—એક મુનિ આત્મારામજી ઉપર વલ્લભવિજય મહારાજનો ને બીજો બ્ર૦ શીતલપ્રસાદજીનો સાહિત્યકા મહત્વ વ પ્રચારકે ઉપાય પર હતો તે અમે વાંચ્યો હતો તથા વિજયધર્મસુરી ઉપરનો ગુજરાતી નિબંધ પણ અમે વાંચ્યો હતો. આ બે નિબંધો ઉપયોગી હોવાથી અમે તે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરીશું તેમજ આવેલા નિબંધોની કુલ્લે યાદી પણ આવતા અંકમાં પ્રકટ કરાશે. એકંદરે આ પરિષદે જે કાર્ય કર્યું છે તે ગુજરાતના દિગંબર જૈનોને અનુકરણીય છે. પરિષદનું કાર્ય નિભાવવાને આશરે ૧૨૦૦) નું ફંડ થયું હતું જે સમયે એક બાલુભાઇ ભાવસારે ૧) આપતાં તેનું લીલામ કરતાં ૭૦૨) ઉપજ્યા હતા. પરિષદ થોડા વખતમાં થવા પામી હતી પણ તેને સફલતા ઘણીજ સારી મળી છે. જૈન વનિતા વિશ્રામની બાળાઓએ પણ ગીત ગરબાઓથી સારો આનંદ આપ્યો હતો.

स्या० महाविद्यालय–का १७वां वार्षिकोत्सव ता० २ मईको बाबू श्रीप्रकाशजी बेरिष्टर सं० 'आन' के सभापतित्वमें सफलतापूर्वक होगया। श्वे० पांच यती व मानबाई कच्छ भी पधारे थे। मंत्रीने प्रकट किया कि इस विद्यालयसे आजतक करीब १०० पंडित तैयार होकर निकले हैं। फिर विद्यार्थियोंके संस्कृत व हिन्दी संवाद होनेके बाद ब्र० सीतलप्रसादजीका जैन धर्मकी प्राचीनता, उत्तमता व व्यापकता पर व्याख्यान हुआ था व अंतमें उत्तीर्ण छात्रोंको पारितोषिक दिया गया था।

लुहरीसेन दि० जैन सभाका प्रथम अधिवेशन वैशाख सुदी ३को गजरथ प्रतिष्ठोत्सवके समय हरकुवा (दमोह) में चौधरी ननाईलालजी टडाके सभापतित्वमें होगया जिसमें कार्यकर्ताओंका चुनाव हुआ व जाति सुधारके प्रस्ताव पास हुए है।

समाधिमरण-अमरावतीमें सिं० मूलचंदजीका ६४ वर्षकी आयुमें समाधिमरण होगया। आपने अपनी मृत्युके समय पहलेसे बतला दिया था और क्रमशःसे सब प्रकारका आहार औषधि त्याग करके क्षमावणी व आत्मचिंतवन करके प्राण छोड़े थे। अंत समय १०१) दान भी कर गये हैं।

ઘોડાદરથી–મોડાશીયા ફતેચંદભાઇ તારાચંદ લખી જણાવે છે કે મુનિ મહારાજ શ્રી શાંતિસાગરજી (છાણીવાળા) રાણાપુરથી સાગવાડા, ડુંગરપુર, દેવલ થઈ છાંણી તા૦ ૪-૫-૨૪ ના રોજ પધાર્યા હતા, જેની મને ખબર હોવાથી હું પણ ત્યાં ગયો હતો. ત્યાં એક દિવસ મેળાવડો કરાવી ઘણો ઉપદેશ આપવાથી ઘણા ભાઇઓ તથા બ્હેનોએ નીયમ વ્રતો લીધા હતા. અત્રેથી મુનિજી તા૦ ૬ એ નવાગામ પધાર્યા હતા. ત્યાં બે દિવસ રહી ઉપદેશ આપ્યો જેથી અનેક વ્રતો લેવાયા તથા અન્ય લોકોએ પણ દારૂ માંસ ત્યાગના નીયમ લીધા હતા તથા નવાગામ પાઠશાળા માટે માસિક રૂ. ૫) ઔષધ દાન માટે તથા ૪ પાઠશાળા માટે માસિક રૂ૦ ૧૦) ના પુસ્તકો તથા છાંણી લાયબ્રેરી તથા ઔષધ દાન ખાતે રૂ૦ ૫) મળી રૂ૦ ૨૦) માસિકની વ્યવસ્થા કરી ગયા હતા. ત્યાંથી મુનિજી તા૦ ૮ મીએ ઘોડાદર પધાર્યાં ત્યાં પણ ઉપદેશ આપવાથી બાઇઓમાં ન્હાવાનો બિલકુલ રીવાજ નહોતો તેનો નિયમ લેવાડયો હતો. અને ત્યાંથી બાવલવાડા તા૦ ૧૦ ના રોજ પધાર્યા હતા તેમજ ત્યાંથી તા૦ ૧૧ ભાંણદા થઇ કેસરીયાજી પધાર્યા છે. હું પણ બાવલવાડા સુધી સાથે હતો. મુનિજીની વૃત્તિ જાણે ચોથા આરાના મહામુનિની વૃત્ત જેવીજ જણાય છે. તેમને ઘી ખાંડ ગોળ રસ બીલકુલ ત્યાગ છે. ફક્ત મકાઇ તથા ઘઉંની રાબડી અને દાળ ભાતનો તથા દુધનો આહાર કરે છે. પરીણામ બહુત શાંત છે. આપનો હવે કેશરીયાજી, ડુંગરપુર, સાગવાડા થઇ ઇન્દોર જવા વીચાર છે ને ત્યાંજ ચાતુર્માસ થાય તેવો સંભવ છે.

મારા હસ્તકની ચારે પાઠશાળાની વાર્ષિક પરીક્ષા તા૦ ૨૮-૫-૨૪ બાવલવાડા તા૦ ૩૦-૫-૨૪ નવાગામ, તા૦ ૨-૬-૨૪ છાણી અને ત્યાંથી તા૦ ૪-૬-૨૪ ના રોજ દેવલ લેવાની મુદત છે માટે જેમનો આ પ્રસગે આવવા વિચાર હોય તો ઘોડાદર જરૂર પધારશો.

पवित्र काश्मीरी केशर–

कः मात्र ३) फी तोला है।

मगानेका पता–

मनेजर–दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी-सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।